प्रकाशक
सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट
बीकानेर (राजस्थान)

प्रथम संस्करण
मूल्य ३ ५

मुद्रक
दुर्गा प्रिंटिंग वर्क्स
आगरा

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री के. एम. पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिए की गयी थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानों एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य संस्था को प्रारंभ से ही मिलता रहा है।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियां चलायी जा रही हैं, जिनमें से निम्न प्रमुख हैं—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस संबंध में संस्था विभिन्न स्रोतों से दो लाख से अधिक शब्दों का संकलन कर चुकी है। इसका संपादन आधुनिक कोशों के ढंग पर प्रारंभ किया जा चुका है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द संपादित हो चुके हैं। कोश में शब्दों के अर्थ के अतिरिक्त व्याकरण, व्युत्पत्ति और उदाहरण आदि महत्त्वपूर्ण सामग्री दी गयी है। यह एक अत्यंत विशाल योजना है, जिसकी सतोषजनक क्रियान्विति के लिए प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य निकट भविष्य में उपलब्ध हो जायगा और इसका प्रकाशन प्रारंभ किया जा सकेगा।

२. विशाल राजस्थानी-मुहावरा-कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द-भंडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है। अनुमानतः पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग

में सात आते हैं। लगभग दस हजार मुहावरों का अर्थ और प्रयोग के उदाहरण सहित संग्रह हो चुका है और उस को शीघ्र ही प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम साध्य कार्य है। यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य जगत को दे सके तो यह संस्था के लिए ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी।

३ आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का प्रकाशन

इस योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१ कळायण, ऋतु-काव्य (लेखक श्री नानूराम संस्कर्ता)
२ आभै पटकी, राजस्थानी भाषा का प्रथम सामाजिक उपन्यास (ले. श्री श्रीलाल जोशी)
३ बरसगांठ, मौलिक कहानी-संग्रह (ले. श्री मुरलीधर व्यास)।

संस्था की मुखपत्रिका 'राजस्थान भारती' में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है जिसमें राजस्थानी कविताएँ कहानियाँ और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

यह संस्था की त्रैमासिक मुखपत्रिका है जो विगत १४ वर्षों से प्रकाशित हो रही है। पत्रिका की विद्वानों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव तथा प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयों के कारण इसका त्रैमासिक रूप से नियमित प्रकाशन संभव नहीं हो सका है। इसके भाग ५ का अंक ३–४ 'डा. लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अंक एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका के छै भाग प्रकाशित हो चुके हैं सातवें भाग के प्रथम दो अंक राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड विषयक सचित्र और बृहत् विशेषांक के रूप में प्रकाशित हो रहे हैं।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्त्व के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है और इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओं के लिए 'राजस्थान भारती' अनिवार्यतः संग्रहणीय शोधपत्रिका है। इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्त्व, इतिहास, कला आदि विषयक लेखों के अतिरिक्त संस्था के सदस्य विद्वानों द्वारा लिखित लेखों की वृहद् सूचियाँ भी प्रकाशित की जाती हैं। अब तक तीन विशिष्ट सदस्यों डा. दशरथ शर्मा, श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा के लेखों की वृहद् सूचियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

२. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, संपादन एवं प्रकाशन

राजस्थान की साहित्य-निधि की प्राचीन, महत्त्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिए उन्हें सुसंपादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवाकर उचित मूल्य में वितरित करने की संस्था की योजना है। संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

(१) पृथ्वीराजरासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से लघुतम संस्करण का संपादन करवाकर उसका कुछ अंश 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करणों और उसके ऐतिहासिक महत्त्व पर कई लेख राजस्थान भारती में प्रकाशित हुए हैं।

(२) राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखां) की ७५ रचनाओं की खोज की गई जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई। कवि का महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

(३) राजस्थान के जैन संस्कृत-साहित्य का परिचय नामक निबंध राजस्थान-भारती में प्रकाशित किया गया है।

(४) मारवाड़-क्षेत्र के लगभग ५ लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्रों के सैकड़ों लोकगीत घूमर के लोकगीत बाल-लोकगीत लोरियाँ और लगभग ७ लोक-कथाएँ संगृहीत की गयी हैं। राजस्थानी कहावतों के भी दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत पाबूजी के पवाड़े और राजा भरथरी आदि लोक-काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किये गये।

(५) बीकानेर और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखों का विशाल संग्रह 'बीकानेर-जैन-लेख-संग्रह' नामक बृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

(६) जसवंत-उद्योत मुहता नैणसीरी ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का संपादन एवं प्रकाशन हो चुका है और हो रहा है।

(७) जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचंद भंडारी की ४ रचनाओं का अनुसंधान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के संबंध में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान-भारती' में प्रकाश डाला गया है।

( ) जैसलमेर के अप्रकाशित १ शिलालेखों और 'भट्टि-वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

(९) बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसंधान किया गया और 'ज्ञानसार-ग्रंथावली' के नाम से उनमें से कुछ का प्रकाशन किया गया है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

६ जयन्तियाँ और साप्ताहिक गोष्ठियाँ

संस्था की ओर से समय-समय पर ख्यातनामा विद्वानों और साहित्य-सेवियो के निर्वाण-दिवस और उनकी जयन्तियाँ मनायी जाती है। इस प्रकार के उत्सवों मे डाक्टर टैसिटोरी लोकमान्य तिलक पृथ्वीराज राठौड़ मुनि समयसुन्दर आदि के स्मृति-उत्सव विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

इन उत्सवों के साथ ही साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है इनमे महत्त्वपूर्ण निबंध लेख कविताएँ और कहानियाँ आदि पढी जाती है जिससे अनेक-विध नवीन साहित्य के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योग मिला है। विचार-विमर्श के लिए अन्याय गोष्ठियों तथा भाषणमालाओं आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता है।

(१) बाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानो को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा वासुदेवशरण अग्रवाल डा कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास डा जी रामचन्द्रन्, डा सत्यप्रकाश डा डब्ल्यू एलेन डा सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या डा तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय-ख्याति प्राप्त विद्वानों के भाषण इस कार्यक्रम के अन्तर्गत हो चुके है।

दो वर्ष पूर्व महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ आसन की स्थापना की गयी थी। राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड विद्वान श्री मनोहर शर्मा एम ए विसाऊ, और पं श्रीलालजी मिश्र एम ए हूडलोद के भाषण इस आसन से इन वर्षों मे हुए।

इस प्रकार सस्था अपने १६ वर्षो के जीवन-काल में संस्कृत हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है। आर्थिक सकट से ग्रस्त इस सस्था के लिए यह सभव नही हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती फिर भी यदा-कदा लड़खड़ाते गिरते-पड़ते उसने 'राजस्थान भारती' का संपादन एवं प्रकाशन जारी

रखा और यह प्रयास किया कि बाधाओं के बावजूद भी साहित्य-सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। संस्था के पास अपना निजी भवन नहीं है न अच्छा संदर्भ-पुस्तकालय है और न कार्य को सुचारु-रूप से संपादित करने के लिए आवश्यक कर्मचारी ही हैं परन्तु फिर भी संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर निश्चय ही संस्था के गौरव को बढ़ानेवाली होगी।

राजस्थानी का साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनों और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त कराना संस्था का लक्ष्य रहा है। संस्था अपनी इस लक्ष्य-पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ता के साथ अग्रसर हो रही है।

अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना संभव नहीं हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोधन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मंत्रालय (Ministry of Scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिए १५,) रु की रकम राजस्थान सरकार को इस मद में प्रदान की तथा राजस्थान सरकार ने भी उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल ३) रु की सहायता राजस्थानी साहित्य के संपादन-प्रकाशन हेतु इस संस्था को वर्तमान वित्तीय वर्ष में प्रदान की है जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ११ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है—

१ राजस्थानी व्याकरण— श्री नरोत्तमदास स्वामी
२ राजस्थानी गद्य का विकास (शोध-प्रबंध)— डा शिवस्वरूप शर्मा 'अचल'

३ अचळदास खीची-री वचनिका— श्री नरोत्तमदास स्वामी तथा दीनानाथ खत्री
४ हमीरायण— श्री भंवरलाल नाहटा
५ पद्मिनी-चरित्र चौपई—
६ दलपत-विलास श्री रावत सारस्वत
७ डिंगल-गीत—
८ पवार-वंश-दर्पण— डा. दशरथ शर्मा
९ पृथ्वीराज राठोड़ ग्रन्थावली— श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बदरीप्रसाद साकरिया
१० हरिरस— श्री बदरीप्रसाद साकरिया
११ पीरदान लालस ग्रन्थावली— श्री अगरचन्द नाहटा
१२ महादेव-पार्वती री वेलि— श्री रावत सारस्वत
१३ सीताराम-चौपई— श्री अगरचन्द नाहटा
१४ जैन रासादि संग्रह— श्री अगरचन्द नाहटा और डा. हरिवल्लभ भायाणी
१५ सदयवत्स वीर प्रबन्ध— प्रो. मंजुलाल मजूमदार
१६ जिनराजसूरि-कृति-कुसुमांजलि— श्री भंवरलाल नाहटा
१७ विनयचन्द-कृति-कुसुमांजलि—
१८ कविवर धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली— श्री अगरचन्द नाहटा
१९ राजस्थानरा दूहा— श्री नरोत्तमदास स्वामी
२० वीर-रसरा दूहा—
२१ राजस्थान के नीति-दोहे— श्री मोहनलाल पुरोहित
२२ राजस्थान व्रत-कथाएं—
२३ राजस्थानी प्रेम-कथाएं—
२४ चंदायन— श्री रावत सारस्वत

२५ भडली— श्री अगरचन्द नाहटा तथा मुनि विनयसागर
२६ जिनहर्ष-ग्रंथावली श्री अगरचन्द नाहटा
२७ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण
२८ दम्पति-विनोद „
२९ हीयाळी राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य
३० समयसुन्दर-रास-पंचक श्री भंवरलाल नाहटा
३१ दुरसा आढा ग्रंथावली श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन-संग्रह (संपादक डा. दशरथ शर्मा) ईसरदास-ग्रंथावली (संपा. बदरीप्रसाद साकरिया) रामरासो (संपा. गोवर्धन शर्मा) राजस्थानी जैन साहित्य (ले. अगरचन्द नाहटा) नागदमण (संपा. बदरीप्रसाद साकरिया) मुहावरा-कोश (संपा. मुरलीधर व्यास) आदि ग्रंथों का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नहीं हो रहा है। हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एवं गुरुता को लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता संस्था को प्राप्त हो सकेगी जिससे उपर्युक्त संपादित तथा अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन संभव हो सकेगा।

इस सहायता के लिए हम भारत सरकार के शिक्षा-विकास सचिवालय के आभारी हैं जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मंजूर की।

राजस्थान के मुख्य मंत्री माननीय मोहनलालजी सुखाड़िया का जो सौभाग्य से शिक्षा-मंत्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिए निरंतर सचेष्ट हैं इस सहायता के प्राप्त कराने में पूरा पूरा योग रहा है। उनके प्रति भी हम अपनी सादर कृतज्ञता प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष श्री जगन्नाथसिंह जी मेहता के भी हम आभारी हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया जिससे हम इस बृहद् कार्य को संपन्न करने में समर्थ हो सके। संस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

इतने थोड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जिनने सराहनीय सहयोग दिया है उन संपादकों एवं लेखकों के भी हम अत्यन्त आभारी हैं।

अनूप-संस्कृत-लाइब्रेरी बीकानेर अभय-जैन-ग्रन्थालय बीकानेर, पूर्णचन्द्र-नाहर-संग्रहालय कलकत्ता जैन-भवन-संग्रह कलकत्ता महावीर तीर्थक्षेत्र-अनुसंधान समिति जयपुर ओरियंटल-इन्स्टीट्यूट बड़ोदा भांडारकर-रिसर्च-इन्स्टीट्यूट पूना खरतरगच्छ-बृहद्-ज्ञान-भंडार बीकानेर, मोतीचंद-खजाञ्ची-ग्रंथालय बीकानेर खरतर-आचार्य-ज्ञानभण्डार बीकानेर, एशियाटिक-सोसाइटी बंबई, आत्माराम-जैन-ज्ञानभंडार बड़ोदा मुनि पुण्यविजयजी मुनि रमणिकविजयजी श्री सीताराम लालस श्री रविशंकर देराश्री पं० हरदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि संस्थाओं और व्यक्तियों से आवश्यक हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त होने से ही उपर्युक्त ग्रन्थों का संपादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति भी अपना आभार प्रकट करते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का संपादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। संस्था ने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिए त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः ॥

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनों को अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल समझकर मा भारती के चरण-

कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक

बीकानेर, — लालचन्द कोठारी

मार्गशीर्ष शुक्ला १५, सं २ १७ — प्रधान-मंत्री

१ दिसम्बर १९६ — सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट

'राजस्थानीरी सगळी बोलियामें मारवाड़ी है। राजस्थानीरा नवीन साहित्यरी साहित्यिक भाषा हुणी चोयीजै—जिको आज तक रैती आयी है। आपाणै व्याकरणरो ढांचो अर्थात क्रिया और सर्वनाम मारवाड़ीरा लेणा हुसी बाकी शब्द तो जैपुरी हाड़ौती माळवी मेवाती बीकानेरी जैसलमेरी शेखावाटी मेवाड़ी सगळांरा वापरणा पड़सी।

इण व्याकरणरी रचनामें विभिन्न भाषावारा घणा व्याकरणांसू लाभ उठायो है जिण वास्तै उणारा लेखकांरो आभार स्वीकार करूं हूं।

बीकानेर
आषाढ़ तीज सं २ वि

नरोत्तमदास स्वामी

पुनश्च

ओ व्याकरण आज १७ बरसां पर प्रकाशित हुवै है। इण बीचमें श्री सीतारामजी लालसरो बणायोड़ो राजस्थानी-व्याकरण प्रकाशित हो चुको है।

न दा स्वा

समर्पण

राजस्थानी भाषारा

प्रथम व्याकरणकार

श्रीरामकरणजी आसोपा-री

स्मृति-में

सादर समर्पित

		पृष्ठ
पाठ २०	क्रिया	५९
पाठ २१	क्रियारा भेद	६०
पाठ २२	पूर्ण और अपूर्ण क्रिया	६३
पाठ २३	वाक्य	६५
पाठ २४	प्रयोग	६६
पाठ २५	अर्थ	६८
पाठ २६	काळ	७१
पाठ २७	क्रियारी रूप-साधना	७४
पाठ २८	क्रियारा रूप	८२
पाठ २९	कर्मवाच्य और भाववाच्य	८८
पाठ ३०	क्रियारो पद-परिचय	९२
पाठ ३१	अव्यय	९५
पाठ ३२	क्रियाविशेषण अव्यय	९६
पाठ ३३	क्रियाविशेषणरा भेद	९९
पाठ ३४	नामयोगी अव्यय	१०१
पाठ ३५	संयोजक अव्यय	१०३
पाठ ३६	केवलप्रयोगी अव्यय	१०५
पाठ ३७	अव्ययरो पद-परिचय	१०६
पाठ ३८	शब्द-साधना	१०८
पाठ ३९	स्वर-विकार	१०९
पाठ ४०	उपसर्ग	११२
पाठ ४१	प्रत्यय	११६
पाठ ४२	शब्द-साधक प्रत्यय	११८
	(क) धातु प्रत्यय	
पाठ ४३	(ख) कृत् प्रत्यय	१२३
पाठ ४४	कई विशेष कृदन्त	१२७

सक्षिप्त

राजस्थानी-व्याकरण

अध्याय २

वर्ण विचार

पाठ २

वर्ण-माळा

(१) राजस्थानी वर्णमाळामें ५१ वर्ण (आखिर) है जिणमे १३ स्वर तथा ३६ व्यंजन है—

(क) स्वर—अ आ इ ई उ ऊ
ऍ ए ऐ ओ ऑ औ ऋ

(ख) व्यंजन—क ख ग घ ङ
च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल व व़
श ष स ह ळ ड़
[ ] अनुस्वार और [ ] विसर्ग

(७) अ इ उ ऍ ऑ और ऋ—ऐ सब ह्रस्व स्वर कहीजै। आ ई ऊ ए ओ ऐ और औ—ऐ सात दीर्घ स्वर कहीजै।

( ) स्वर केवळ मुखसूं बोलीजै जद उणनै निरनुनासिक कैवै।

(९) स्वर मुख और नाक दोनासूं बोलीजै जद सानुनासिक कहीजै।

(१०) लिखावट मे सानुनासिक स्वररी पिछाण वास्तै स्वररै ऊपर आधी मींडी अथवा चन्द्रबिन्दु ल

पाठ ३

लिपि अथवा लिखावट

(१७) राजस्थानी भाषा जिण लिपिमें लिखीजै वा देवनागरी अथवा नागरी लिपि बाजै। राजस्थानमें इणनै शास्त्री तथा गुजरात और महाराष्ट्रमें बाळबोध भी कैवै।

(१८) देवनागरीरै अलावा नीचे बताई लिपियां भी राजस्थानमें चालै—

(१) जैनी।

(२) वाणीकी अथवा महाजनी—इणनै व्यापारी काममें लेवै इणमें मात्रावां नहीं हुवै।

(३) कामदारी—आ राजरा दफ्तरामें प्रायकर चालती।

इण लिपियांरा नमूना आगै परिशिष्टमें दिया है।

(१९) देवनागरी लिपिमें कईक आखर दो-दो तीन-तीन तरियां लिखीजै। जिया—

अ = अ	झ = झ
ए = ए	ण = ण
ऐ = ऐ	र = र
ऋ ऋ	ल = ल
ण = ण	श = श ग
ख = ख	छ = छ
भ = भ	म म

अनुस्वार अथवा —

अनुनासिक अथवा

(२०) स्वर व्यंजनरै आगै लागै जद व्यंजन से मिल जावै।

कर = कर्
मत = मत्
चमक = चमक
चकमक = चकमक
चमकती = चमक्ती
चमकी = चम्की

कम = कम्
तक = तक
मचन = मचन्
बरकत = बर्कत्
चरपरी = चर्परी
चमकारी = चम्कारी

कर = कर्
मत = मत्
धमक = धमक्
धकमक = धकमक
धमकधी = धमक्धी
धमकई = धमक्ई

कम = कम्
तक = तक
मजन = मजन्
बरकत = बर्कत्
बरपरो = बर्परो
धमकारी = धम्कारी

व्यंजनादि प्रत्यय जुड़ै जद शब्द प्राय सीधो जुड़ जाय ।
जियां—

राम + रो=रामरो
कर + णो=करणो

(४१) संधिरा तीन भेद हुवै—

१ स्वर-संधि—जद स्वर और स्वररी संधि हुवै ।

२ व्यंजन-संधि—जद व्यंजन और व्यंजनरी अथवा व्यंजन और स्वररी संधि हुवै ।

३ विसर्ग-संधि—जद विसर्ग और स्वर अथवा विसर्ग और व्यंजनरी संधि हुवै ।

संधिरा भेदांरी सारणी

पूर्व शब्दरै अन्त में	पर शब्दरै आदिमें	संधिरो नाम
स्वर	स्वर	स्वर-संधि १
	व्यंजन	कोई संधि नहीं
	विसर्ग	कोई संधि नहीं
व्यंजन	स्वर	व्यंजन-संधि २
	व्यंजन	व्यंजन-संधि
	विसर्ग	कोई संधि नहीं
विसर्ग	स्वर	विसर्ग-संधि ३
	व्यंजन	विसर्ग-संधि ३
	विसर्ग	कोई संधि नहीं

व्यञ्जनादि प्रत्यय जुड़ै जद शब्दरा प्राय· गीयो हुइ ज्याय।
जियां—

राम + रो = रामरो
घर + ना = घरना

(४३) सन्धिरा तीन भेद हुवै—

१ स्वर-सन्धि—जद स्वर और स्वररी सन्धि हुवै।

२ व्यञ्जन-सन्धि—जद व्यञ्जन और व्यञ्जनरी अथवा व्यञ्जन और स्वररी सन्धि हुवै।

३ विसर्ग-सन्धि—जद विसर्ग और स्वर अथवा विसर्ग और व्यञ्जनरी सन्धि हुवै।

सन्धिरा भेदांरी सारणी

पूर्व शब्दरै अन्त में	पर शब्दरै आदिमें	सन्धिरा नाम
स्वर	स्वर	स्वर-सन्धि १
	व्यञ्जन	कोई सन्धि नहीं
	विसर्ग	कोई सन्धि नहीं
व्यञ्जन	स्वर	व्यञ्जन-सन्धि
	व्यञ्जन	व्यञ्जन-सन्धि २
	विसर्ग	कोई सन्धि नहीं
विसर्ग	स्वर	विसर्ग-सन्धि ३
	व्यञ्जन	विसर्ग-सन्धि ३
	विसर्ग	कोई सन्धि नहीं

पाठ ६

स्वरसंधि

(४४) स्वर-संधिके पाँच भेद हैं—

दीर्घ गुण वृद्धि यण् और अयादि।

(४५) दीर्घ—दो समान स्वर पास-पास आवें तब दोनोंकी जगह दीर्घ स्वर हुआ करे—

अ + अ = आ	राम + अवतार = रामावतार
अ + आ = आ	देव + आलय = देवालय
आ + अ = आ	विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
आ + आ = आ	विद्या + आलय = विद्यालय
इ + इ = ई	रवि + इन्द्र = रवीन्द्र
इ + ई = ई	कवि + ईश = कवीश
ई + इ = ई	मही + इन्द्र = महीन्द्र
ई + ई = ई	मही + ईश = महीश
उ + उ = ऊ	गुरु + उपदेश = गुरूपदेश
उ + ऊ = ऊ	सिन्धु + ऊर्मि = सिन्धूर्मि
ऊ + उ = ऊ	वधू + उपदेश = वधूपदेश
ऊ + ऊ = ऊ	वधू + ऊर्मि = वधूर्मि
ऋ + ऋ = ॠ	मातृ + ऋण = मातॄण

(४६) गुण—अ या आ के आगे इ या ई अथवा उ या ऊ अथवा ऋ आवे तो क्रमसे ए ओ और अर् हुआ करें—

(१) अ + इ = ए	गज + इन्द्र = गजेन्द्र
अ + ई = ए	गण + ईश = गणेश

इ=ई+ए=य्+ए=ये   प्रति+एक=प्रत्येक
इ=ई+ऐ=य्+ऐ=यै   अधि+ऐश्वर्य=अध्यैश्वर्य
इ=ई+ओ=य्+ओ=यो   दधि+ओदन=दध्योदन
इ=ई+औ=य्+औ=यौ   परि+औत्सुक्य=पर्यौत्सुक्य

(२) उ या ऊ+अ=व्+अ=व   मनु+अन्तर=मन्वंतर
उ या ऊ+आ=व्+आ=वा   सु+आगत=स्वागत
उ या ऊ+इ=व्+इ=वि   अनु+इति=अन्विति
उ या ऊ+ई=व्+ई=वी   अनु+ईक्षण=अन्वीक्षण
उ या ऊ+ए=व्+ए=वे   अनु+एषण=अन्वेषण
उ या ऊ+ऐ=व्+ऐ=वै   गुरु+ऐश्वर्य=गुर्वैश्वर्य
उ या ऊ+औ=व्+औ=वौ   गुरु+औत्सुक्य=गुर्वौत्सुक्य

(३) ऋ+अ+र=अ=र   पितृ+अनुमति=पित्रनुमति
ऋ+आ+र्=आ=रा   पितृ+आलय=पित्रालय
ऋ+इ+र्=इ=रि   पितृ+इच्छा=पित्रिच्छा
ऋ+उ+र्=उ=रु   पितृ+उपदेश=पित्रुपदेश
ऋ+ए+र्=ए=रे   पितृ+एषणा=पित्रेषणा
ऋ+ऐ+र=ऐ=रै   पितृ+ऐश्वर्य=पित्रैश्वर्य
ऋ+ओ+र्=ओ=रो   पितृ+ओक=पित्रोक

(४) अयादि—ए ऐ ओ तथा औ इनके आगे कोई स्वर आवे तो इनकी जगह क्रमशः अय् आय् अव् आव् हुआ करें (तथा आगेका स्वर उनमे मिल जावे)—

ए+अ=अय्+अ=अय   ने+अन=नयन
ऐ+अ=आय्+अ=आय   गै+अक=गायक
ओ+ए=अव्+ए=अवे   गो+एषणा=गवेषणा
औ+अ=आव्+अ=आव   पौ+अक=पावक

व्यंजन-संधि

(२१) क् च् ट् प् रै आगै कोई घोष वर्ण आवै तो क् च् ट् प् क्रम सूं ग् ज् ड् ब् हुज्यावै—

वाक् + ईश्वरी = वागीश्वरी

षट् + रिपु = षड्रिपु

(२२) च् अथवा ज् रै आगै अघोष वर्ण आवै तो च्-ज् रो क् हुज्यावै और घोष वर्ण आवै तो ग् हुज्यावै—

वाच् + पति = वाक्पति

वाच् + देवी = वाग्देवी

वणिज् + पुत्र = वणिक्पुत्र

वणिज् + महान = वणिग्महान

(२३) त् रै आगै चवर्ग टवर्ग और 'ल'नै टाळनै कोई घोष वर्ण आवै तो उणरो द् हुज्यावै—

सत् + गुण = सद्गुण

सत् + आचार = सदाचार

(२४) द् रै आगै चवर्ग टवर्गनै टाळनै कोई अघोष वर्ण आवै तो उणरो त् हुज्यावै—

शरद् + काळ = शरत्काळ

(२५) त् अथवा द् रै आगै च्-छ् आवै तो त्-द् रो च् हुज्यावै—

उत् + चारण = उच्चारण

(२६) त् अथवा द् रै आगै ज्-झ् आवै तो त्-द् रो ज् हुज्यावै—

सत् + जन = सज्जन

(१७) त् अथवा द् रै आगै ल् आवै तो त्-द् रो ल् हु ज्यावै —

उत् + लास = उल्लास

(१८) त् अथवा द् रै आगै ह् आवै तो ह् रो ध् हु ज्यावै —

उद् = हार = उद्धार

(१९) छ् ह्रस्व स्वर रै पछै, या आ उपसर्ग रै पछै, आवै तो उणरी च्छ् हु ज्यावै। दीर्घ स्वर रै पछै आवै तो विकल्पसूं हुवै —

परि + छेद = परिच्छेद

वि + छेद = विच्छेद

आ + छादन = आच्छादन

छत्र + छाया = छत्रच्छाया

लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीछाया लक्ष्मीच्छाया

विशेष—भाषारा सब्दा में छ रो च्छ नहीं भी हुवै —

छत्र + छाया = छत्रछाया

(२०) म् रै पछै व्यञ्जन आवै तो उणरो अनुस्वार हु ज्यावै —

किम् + कर = किंकर   किम् + वा = किंवा

सम् + तोष = संतोष   सम् + सार = संसार

सम् + योग = संयोग   सम् + हार = संहार

(२१) म् रै पछै स्पर्श व्यञ्जन आवै तो म् रो विकल्पसूं नासिक्य वर्ण भी हु ज्यावै —

किम् + कर = किङ्कर   किंकर

सम् + कट = सङ्कट   संकट

सम् + चय = सञ्चय   संचय

सम् + ताप = सन्ताप   संताप

सम् + तोष = सन्तोष   संतोष

सम् + पूर्ण = सम्पूर्ण   संपूर्ण

पाठ ८

विसर्ग-सन्धि

(१४) विसर्गरै आगै च् छ् ट् ठ् त् थ् आवै तो विसर्गरी जागा क्रमसूं श् ष् और स् हुज्यावै—

निः + चल = निश्चल
तपः + चर्या = तपश्चर्या
निः + छल = निश्छल
धनुः + टंकार = धनुष्टंकार
मनः + ताप = मनस्ताप

(१५) विसर्गरै आगै श् ष् स् आवै तो विसर्गरो क्रमसूं श् ष् स् हुज्यावै अथवा विसर्ग अविकल कायम रैवै—

दुः + शासन = दुश्शासन दुःशासन
निः + सन्देह = निस्सन्देह, निःसन्देह
निः + सहाय = निस्सहाय निःसहाय

(१६) विसर्गरै पैली अ हुवै और आगमें भी अ आवै तो अ और विसर्ग मिलनै ओ हुज्यावै और आगलो अ लुप्त हुज्यावै—

मनः + अनुकूल = मनोऽनुकूल

(१७) विसर्गरै पैली अ हुवै और आगै कोई घोष व्यंजन आवै तो अ और विसर्ग मिलनै ओ हुज्यावै—

मनः + रथ = मनोरथ
मनः + वृत्ति = मनोवृत्ति
रजः + गुण = रजोगुण

(६८) विसर्गरै पैली अ हुवै और आगै अ नै छाडनै कोई दूसरो स्वर हुवै तो विसर्गरो लोप हुज्यावै—

अत + एव = अतएव

(६९) विसर्गरै पैली अ और आ नै छोडनै कोई दूसरो स्वर हुवै तथा आगै कोई घोष वर्ण आवै तो विसर्गरो र हुज्यावै—

नि + धन = निर्धन
दु + जन = दुर्जन
नि + आशा = निराशा
दु + उपयोग = दुरुपयोग

(७०) विसर्गरै पैली इ या उ हुवै और आगै क ख् या प फ हुवै तो विसर्गरो ष् हुज्यावै—

नि + कारण = निष्कारण
नि + फल = निष्फल
दु + कर = दुष्कर

(७१) विसर्गरै पैली ह्रस्व स्वर हुवै और आगै र आवै तो उण ह्रस्व स्वर और विसर्ग दोनांरी जागां दीर्घ स्वर हुज्यावै—

नि + रस = नीरस
नि + रोग = नीरोग

(७२) ऊपरला नियमांरा कई अपवाद—

यश + चित् = यशश्चित्
तत + चित् = ततश्चित्
यश + कर = यशस्कर
नम + कार = नमस्कार
भा + कर = भास्कर
पुन + उक्ति = पुनरुक्ति
पुन + जन्म = पुनर्जन्म

अध्याय ३

शब्द विचार

पाठ १

शब्दरा भेद

(७३) सब्द-विचारमें सब्दाँरै भेदाँरो प्रयोगाँरो रूपांतराँरो और व्युत्पत्तिरो निरूपण हुवै।

(७४) सब्दरा तीन भेद हुवै—

(१) संज्ञा (२) क्रिया (३) अव्यय।

(७५) कोई पदार्थरो नाम अथवा विशेषता बतावै बो सब्द संज्ञा कहीजै। यथा—पोथी जोधपुर, ऊंचाई सोनो पंचायत काळो ऊँचो ऊपरलो घणो तीन।

(७६) कामरो हुवणो बतावै बो सब्द क्रिया कहीजै। यथा—जावणो देखणो करणो पढ़ै है बोलसी नाची।

(७७) संज्ञा और क्रिया सब्दाँमें रूपान्तर हुवै अर्थात् अेक ही सब्दरा कई रूप बणै। यथा—

घोड़ो घोड़ा घोड़ा घोड़ी घोड़िया।
हूँ, म्हें मनै म्हां म्हारी म्हांसूं।
काळो काळा काळी।
जावै जासी जावतो जावती गयो गया।

(७८) संज्ञामें जाति वचन और विभक्तिरा रूपान्तर हुवै। यथा—

(१) जाति—

नरजाति — घोड़ो काळो वो

नारीजाति — घोड़ी काळी वा

(२) वचन—

अेकवचन — घोड़ो काळो वो

अनेकवचन — घोड़ा काळा वै

(३) विभक्ति—

पहली — घोड़ो घोड़ा

दूसरी — घोड़ा घोड़ां

तीसरी — घोड़ै घोड़ां

सर्वनाम संज्ञामें पुरुषरो रूपान्तर और हुवै—

(४) पुरुष—

अन्यपुरुष — वो वा वै

मध्यमपुरुष — तू थे आप

उत्तमपुरुष — हूं म्हे आपां

(७१) क्रियामें जाति वचन पुरुष काळ वाच्य तथा प्रयोगरा रूपान्तर हुवै। यथा—

(१) जाति—

नरजाति — गयो करतो

नारीजाति — गयी करती

(२) वचन—

अेकवचन — गयो करतो जाऊं

अनेकवचन — गया करत्या जावां

(३) पुरुष—

अन्यपुरुष — देसी देवै जासी

मध्यमपुरुष — देसी देवो जासो

उत्तमपुरुष — देसूं देस्यां जासां

(४) काळ—

वर्तमान	—	मरै	जावै
भूत	—	मरिया	आयो
भविष्य	—	मरैला	आवैला

(५) वाच्य—

कर्तृवाच्य	—	जावै	करै	करसी
कर्मवाच्य	—	×	करीजै	करीजसी
भाववाच्य	—	जावीजै	×	×

(६) प्रयोग—

कर्तरिप्रयोग — घोड़ा दौड़िया।
कर्मणिप्रयोग — घोड़ां घास खायो।
भावेप्रयोग — घोड़ांसूं उठीजियो नहीं।

( ) जिन शब्दमें रूपान्तर नहीं हुवै वो अव्यय। यथा—ऊपर, आगै आजकल अठै किन्तु, अथवा।

पाठ १

संज्ञा

(१) संज्ञारा तीन भेद हुवै—

(१) नाम (२) सर्वनाम (३) विशेषण।

(८२) वस्तुरा नामनै नाम कैवै। यथा—गाय भारत रामदास गंगा चावळ सोनो सभा धीरज।

गाय	अेक	प्राणीरो नाम है।
भारत	अेक	देशरो नाम है।
रामदास	अेक	आदमीरो नाम है।
गंगा	अेक	नदीरो नाम है।
चावळ	अेक	अन्नरो नाम है।
सोनो	अेक	धातुरो नाम है।
सभा	मिनखांरी जमात रो नाम है।	
धीरज	अेक	गुणरो नाम है।

(३) नामरै बदळै आवै बो शब्द सर्वनाम। यथा—हूं तू बो जो।

(१) सीता बोली—हूं जासूं।
इण वाक्यमें 'हूं' सीतारै बदळै आयो है।

(२) गंगाराम रतननै कयो—तू किसो पाणी मेलैला ?
इण वाक्यमें 'तू' रतनरै बदळै आयो है।

(३) लाडू परै कोनी बो बजार गयो है।
इण वाक्यमें 'बो' लाडूरै बदळै आयो है।

(८४) नाम अथवा सर्वनामरी विसेषता बतावै बो शब्द विसेषण। यथा—

(१) काळो घोड़ो आयो।

इण वाक्य में 'काळो' शब्द घोड़ैरो रंग बतावै।

(२) औ काम आछो कोनी।

इण वाक्य में 'आछो' शब्द कामरो गुण बतावै।

(८५) जिण नाम अथवा सर्वनामरी विसेषता विसेषण बतावै उणनै विसेष्य कैवै। ऊपरला उदाहरणांमें काळो और आछो शब्द विसेषण है तथा घोड़ो और काम शब्द विसेष्य है।

पाठ ११

नाम

(८६) नामरा तीन भेद हुवै—(१) जातिवाचक (२) व्यक्तिवाचक (३) भाववाचक ।

(८७) अेक जातिरै नामनै जातिवाचक कैवै । जियां—गाय बड़ पेड़ ।

गाय — जिनावरांरी अेक जातिरो नांव है ।
बड़ — पेड़ांरी अेक जातिरो नांव है ।
पेड़ — वनस्पतियांरी अेक जातिरो नांव है ।

( ) अेक जातिरी अेक चीजरा नामनै व्यक्तिवाचक नाम कैवै । जियां—गंगा पार्वती बीकानेर ।

गंगा अेक नदीरो नांव है ।
पार्वती अेक स्त्रीरो नांव है ।
बीकानेर अेक नगररो नांव है ।

(८९) गुण सभाव काम अथवा अवस्थारै नामनै भाव-वाचक नाम कैवै । जियां—मिठास चतराई भजन भलाई नींद पीड़ गरीबाई ।

पाठ १२

सर्वनाम

(९०) सर्वनामरा छै भेद हुवै—(१) पुरुषवाचक (२) निश्चयवाचक (३) अनिश्चयवाचक (४) प्रश्नवाचक (५) संबंधवाचक (६) निजवाचक।

(९१) पुरुषवाचक सर्वनाम पुरुषरो बोध करावै।

पुरुष तीन है—(१) उत्तम (२) मध्यम (३) अन्य।

बोलै जको उत्तम पुरुष। जियां—हूं म्हे, आपां।

जिणसूं बोलै बो मध्यम पुरुष। जियां—थू थे आप।

जिणरी बात करीजै बो अन्यपुरुष। जियां—बो बै।

उत्तम-पुरुष और मध्यम-पुरुषरा सर्वनामां (हू थू आप) नै छोडनै बाकी सारा सर्वनाम और नाम अन्यपुरुष हुवै। निजवाचक आप तीनूं पुरुषामें काम आवै।

(९२) निजरो अर्थ देवै जको सर्वनाम निजवाचक कहीजै। जियां—आप (आपनै आपसूं आपरो आपमें)।

(९३) निश्चयवाचक सर्वनाम नजीकी अथवा दूररी निश्चित वस्तुरो बोध करावै। जियां—ओ बो।

ओ नजीकी वस्तुरो बोध करावै। बो दूररी वस्तुरो बोध करावै।

(९४) अनिश्चयवाचक सर्वनाम अनिश्चित वस्तुरो बोध करावै। जियां—कोई की।

(९५) प्रश्नवाचक सर्वनाम प्रश्न पूछणमें वापरीजै। जियां—कुण कांई किसो।

(९६) संबंधवाचक सर्वनाम दो वाक्यांरो संबंध करै। जियां—जो जका सो।

जावै जको फिर आवै कोनी।

ओ काम जिणियां जको ही आदमी है।

बो बो ही आदमी है जको काम जिणियो हो।

पाठ १

विशेषण

(९७) विशेषण ४ भांत हुवै—(१) गुणवाचक (२) परिमाणवाचक (३) संख्यावाचक (४) सार्वनामिक।

(९८) गुणवाचक सबद गुण रो बोध करावै। जियां—

काळो ऊंचो भलो बावळो।

(९९) परिमाणवाचक सबद परिमाण बतावै। जियां—

थोड़ो घणो सगळो पूरो अधूरो कमती बेसी।

(१००) संख्यावाचक सबद गिणती बतावै। जियां—

एक दो बीस सौ हजार
पैलो दूजो दसमो हजारवो
पाव आधो सवा डोढ साढीतीन
चौथाई सवायो दुगणो
अनेक घणा थोड़ा सगळा।

(१०१) पुरुषवाचक नै निजवाचक सर्वनामां टाळनै बाकी सारा सर्वनामां रो विशेषण री भांत प्रयोग हुवै। विशेषण री भांत काम आवै जद वै विशेषण कहीजै। इणांनै सार्वनामिक विशेषण कैवै। जियां—

ओ आदमी वो बळद कोई रेल की दूध कसा मुगाई, कुण किसन कांई बात।

(१०२) सबनामां सारूं प्रत्यय जोड़नै गुणवाचक परिमाणवाचक तथा संख्यावाचक विशेषण बणायीजै। इणांरा उदाहरण नीचै सारणीम दिया है—

विशेषण	यो	वा	वो ऊ	सो	जो	कुन
गुणवाचक	इसो ऐसो	विसो वैसो	 ओसो	तिसो तैसो	जिसो जैसो	किसो कैसो
परिमाण-वाचक	इत्तो इतरो इतनो	वित्तो वितरो वितनो	उत्तो उतरो उतनो	 तितरो तितनो	जित्तो जितरो जितनो	कित्तो कितरो कितनो
संख्यावाचक	इत्ता इतरा इतना	वित्ता वितरा वितना	उत्ता उतरा उतना	 तितरा तितना	जित्ता जितरा जितना	कित्ता कितरा कितना

(४) आणी — सेठ — सेठाणी
ठाकर — ठकराणी
बाणियो — बणियाणी
गुरु — गुराणी
देवर — देराणी

(५) अवाणी — गुरु — गुरुआणी
पांडे — पंडआणी

(६) इयाणी — भाटी — भटियाणी
धणी — धणियाणी

(१८) कितराक नरजातिरा सब्दांरी नारीजाति वाचक निराळी है।
जियां —

ऊंट	— सांढ	भाई	— बैन
गोधो	— गाय	भाई	— भौजाई
नर	— नारी	भाई	— भाभी
नर	— मादी	भाई	— भावज
पिता	— माता	मर्द	— औरत
पुरुष	— स्त्री	मर्द	— लुगाई
फूफो	— भूवा	मोर	— ढेलड़ी
बन	— माप	राजा	— राणी
बाप	— मा	लोग	— लुगाई
बर	— बहू	सांड	— गाय
बाणियो	— बिराणी	साळो	— सालेली
धणी	— बिराणी	साढू	— साळी
धणी	बहू बैर	साप	— सैंप (सापणी भी)
धणी	लुगाई	सुसरो	— सासू
मिनख	— लुगाई	सूर	— भूंडण

	आचार्य	आचार्या
	क्षत्रिय	क्षत्रिया
	बालक	बालिका
	नायक	नायिका
	उपदेशक	उपदेशिका
(२) ई	सुंदर	सुंदरी
	देव	देवी
	दास	दासी
(३) री	कर्ता	कर्त्री
	धाता	धात्री
	दाता	दात्री
(४) आनी	भव	भवानी
	रुद्र	रुद्राणी
	इन्द्र	इन्द्राणी
(५) नी	पति	पत्नी
(६) इनी	मानी	मानिनी
	हितकारी	हितकारिणी
(७) आ	साहब	साहबा
	वालिद	वालिदा

(११४) नामरै अलावा अन्यपुरुष-वाचक सर्वनाम तथा ओकारान्त विशेषणामे भी जाति-भेद हुवै—

(क) विशेषण—काळो काळी
रातो राती

(ख) सर्वनाम—वो वा
जको जकी जका

(१२२) काळी नरजातिरा और नारीजातिरा तमाम विशेषण दोनां वचनामे सरीसा रैवै—

काळी घोड़ी ।
काळी घोड़ियां ।

(१२३) नारीजातिरा विशेषण नामरी सांत काम आवै जद उणरो अनेकवचन नामरी सांत ही ज बणै—

सुन्दरी मामी ।
सुन्दरियां मामी ।

(१२४) सर्वनामांरा अनेकवचन इण मुजब हुवै—

हूं	म्हे, आपां	जो	जो
तू	थे आप	जको	जका जके
वो	वै	कुण	कुण
वा	वै	कांई	कांई
यो	ऐ	की	की
या	ऐ	कोई	कोई

(११०) नारीजातीय सब्दांमें पहली तीनूं विभक्तियांरा रूप सरीखा हुवै—

(१) पहली रोटी — रोटियां
(२) दूसरी रोटी — रोटियां
(३) तीसरी रोटी — रोटियां

(१११) नरजातिरा सब्दांम दूसरी और तीसरी विभक्तियांरा रूप समान हुवै। जियां—

(१) पहली नर — नर माळी — माळी
(२) दूसरी नर — नरां माळी — माळियां
(३) तीसरी नर — नरां माळी — माळियां

(११२) ओकारान्त नरजातिरा सब्दांमें तीनूं विभक्तियांरा रूप न्यारा-न्यारा हुवै। जियां—

(१) पहली घोड़ो — घोड़ा
(२) दूसरी घोड़ा — घोड़ां
(३) तीसरी घोड़ै — घोड़ां

(११३) पहली तीन विभक्तियांरा प्रत्यय इण मुजब है—

(क) नरजातीय ओकारान्त सब्दांमें—

(१) पहली × — आ
(२) दूसरी आ — आं
(३) तीसरी ऐ — आं

(ख) अन्य सब्दांमें—

(१) एकवचन में कोई प्रत्यय नहीं लागै।
(बहुवचनमें नारीजातीय सब्दांमें बहुवचनरा प्रत्यय तीनांईज विभक्तियांमें लागै नरजातीय सब्दांमें पहली विभक्ति में कोई प्रत्यय नहीं लागै दूसरी-तीसरी विभक्तियांमें नारीजातीय सब्दां जिसाईज प्रत्यय लागै।

(११) तीनूं विभक्तियांरा प्रत्यय नीचै कोठामें बताया है—

(११४) पञ्चमी पाच विभक्तियां बणावण वास्तै दूसरी अथवा तीसरी विभक्तिरै आगै नीचे बताया परसर्ग लगाईजै —

(४) चौथी नै
(५) पाचवीं सू
(६) छठी रौ
(७) सातवीं मे
(८) आठवीं पर

(११६) पुराणी भाषा और बोलियामें नीचे बताया प्रत्यय भी पाया जै —

चौथी रहइ रइ रै कों कु नु नइ भणी
पाचवी सउ सिउ स्यू सै हुंत थकी तै मणी
छठी को चो ना वो चो नु
तणो हंदो संदो केरो रहंदो
सातवी मइ माय मां मैं मंझ माहे माहि माइ महि
आठवी परि पइ पै माथै

(११७) छठी और चौथी विभक्तियारै प्रत्ययांरो मूळ अेक ही है —

छठी	चौथी	
रो	रै	
नो	नै	नु
को	कै	कु

(११) छठी विभक्ति विशेषण-आळी बाई काममे आवै। इण वास्तै इणरै प्रत्ययमें जाति और वचनरो भेद हुवै —

नरजाति अेकवचन — रो।
अनेकवचन — रा।

नारीजाति अेकवचन   री

अनेकवचन   री

(१११) छठी विभक्तिरै आगै नरजातीय अेकवचन दूसरी तीसरी आदि विभक्ति म हुवै तो 'रो' री जागा 'रा' या 'रै' हुय्याई। जियां—

राजा रा घोड़ा पर

राजा-रै घोड़ै पर।

किसा-रा माथा पर

किसै-रै माथै पर।

(१४) छठी विभक्तिरै आगै नामयोगी शब्द आवै तो 'रो' री जागा 'रै' हुय्यावै। जियां—

म्हारै ऊपर।

घरै लारै।

पाठ १७

कारक

(१४१) कारक संज्ञारो संबंध क्रियासूं (अथवा कदे-कदे कृदंतसूं) बतावै ।

(१४२) राजस्थानी में आठ कारक है—(१) कर्ता (२) कर्म (३) करण (४) सम्प्रदान (५) अपादान (६) अधिकरण (७) संबंध और ( ) संबोधन ।

(१४३) संबोधन और संबंध कारक (तथा कदे-कदे दूसरा कारक भी) संज्ञारो संबंध क्रियासूं नहीं बतावै । जियां—

म्हारो घर ।
म्हारै दफ्तर ।
मैंसूं आगै ।
मनै चोईजतो ।
मोर नाचियो ।

संबोधनरो संबंध वाक्य में दूजा किणी शब्दसूं नहीं हुवै ।
संबंधरो संबंध नाम अथवा नामबोधीसूं हुवै ।

(१४४) क्रियानै करै बको कर्ता । कर्ता कारकमें पहली दूसरी तीसरी अथवा पांचवी विभक्ति आवै । जियां—

घोड़ो घास कोनी खावै ।
घोड़ा घास कोनी खायो ।
घोड़ै घास कोनी खायो ।
घोड़ै-सूं घास कोनी खाईजियो ।

(१५०) संबंध कारक दो संज्ञावांरो संबंध बतावै। इणमें छठी विभक्ति आवै। जियां—

राजा-री घर।

(१५१) संबंध कारक विशेषणरी भांति संज्ञारी विशेषता बतावै।

(१५२) संबंध कारक जिण संज्ञारी विशेषता बतावै उणनै भेद्य तथा संबंध-कारकनै भेदक कैवै। जियां—

पोथी-रो पानो फाट्यो।

इण वाक्यमें पोथी भेदक और पानो भेद्य है।

(१५३) ओकारान्त विशेषण-भांति बाई छठी विभक्तिरा प्रत्ययमें भेद्यरी जाति और वचनरै अनुसार, जाति और वचनरो भेद हुवै। जियां—

भेद्य			प्रत्यय	उदाहरण
जाति	विभक्ति	वचन		
नर-जाति	पहली	एक	रो	पोथी-रो पानो
		अनेक	रा	पोथी रा पाना
	दूसरी	एक	रा	पोथी-रा पाना।
		अनेक	रा	पोथी रा पानां।
	तीसरी आदि	एक	रा रै	पोथी रा पाना-में पोथी-रै पानै-में
	सब	अनेक	रा रै	पोथी रा पानां-में पोथी-रै पानां-में
नारी जाति	सगळी विभक्तियां	दोनूं वचन	री	पोथी री जिल्द-जिल्दां पोथी री जिल्द-जिल्दां पोथी री जिल्दमें पोथी री जिल्दांमें

(१२४) संबोधन कारक पुकारणमें बापरीजै। सबोधनमें दूसरी विभक्ति हुवै। जियां—

बैल! बैलां!
राजा! राजा!
घोड़ा! घोड़ा!
माळी! माळियां!

(१२५) संबोधन कारकरी पहली प्रायकर हे, ओ, अरे आदि अव्यय जोड़ दिया करै है।

(१२६) नामयोगी अव्यय सगळां रै साथै सदाम छठी, तीसरी और कदे-कदे पांचवीं विभक्ति आवै। जियां—

छठी— घररै मांई
घोड़ारै ऊपर (घोड़ैरै माथै)
नदियारै मांय
बामणांरै वास्तै
म्हारै बिचाळै।

पांचवीं— स्यामू आगै
सहरांसू दूर,
पाणीसूं परै।

तीसरी— घर मांई
घोड़ै ऊपर
नदियां मांय
बामणां वास्तै
म्हां बिचाळै।

(१२७) कदे-कदे दूसरी विभक्ति भी आवै जियां—

घोड़ा ऊपर,
घोड़ा वाई
घोड़ा नैड़,
बगत मांय।

(१५८) कुन-सै कारकमे कुन-सी विभक्ति आवै आ बात नीचै कोठा-मे बतायी है—

कारक	विभक्ति
कर्ता	पहली तीसरी पाचवी
कर्म	चौथी पहली
सम्प्रदान	चौथी
करण	पांचवी तीसरी
अपादान	पाचवी
अधिकरण	सातवी आठवी तीसरी
सबध	छठी
सबोधन	दूसरी

(१५९) कुन-सी विभक्ति कुण-सा कारकांमे आवै आ बात नीचै कोठामे बतायी है—

विभक्ति	कारक
पहली	कर्ता कर्म
दूसरी	सबोधन
तीसरी	कर्ता करण अधिकरण
चौथी	कर्म संप्रदान
पाचवी	करण अपादान
छठी	सबध
सातवी	अधिकरण
आठवी	

पाठ १८

शब्दांरा रूप

(११) नाम-शब्दांरा रूप—

(१) नरजातीय अकारांत शब्द ( ) नारीजातीय अकारान्त शब्द

	नर		गाय	
	एक	अनेक	एक	अनेक
पहलो	नर	नर	गाय	गायां
दूसरी	नर	नरां	गाय	गायां
तीसरी	नर	नरां	गाय	गायां
चौथी	नर-नै	नरां-नै	गाय-नै	गायां-नै
पांचवीं	नर-सूं	नरां-सूं	गाय-सूं	गायां-सूं
छठी	नर रा	नरां रा	गाय रा	गायां रो
सातवीं	नर-में	नरां-में	गाय में	गायां-में
आठवीं	नर पर	नरां पर	गाय पर	गायां पर

(३) नरजातीय आकारांत शब्द (४) नारीजातीय आकारांत शब्द

	राजा		मा	
१	राजा	राजा	मा	मावां
२	राजा	राजावां राजां	मा	मावां
३	राजा	राजावां राजा	मा	मावां
४	राजानै	राजावांनै राजांनै	मानै	मावांनै
		इत्यादि		इत्यादि

(५) नरजातीय इकारांत शब्द

पति

१	पति	पति
२	पति	पतियां
३	पति	पतियां
४	पतिगै	पतियांगै

इत्यादि

(६) नारीजातीय इकारांत शब्द

मति

मति	मतियां
मति	मतियां
मति	मतियां
मतिगै	मतियांगै

इत्यादि

(७) नरजातीय ईकारांत शब्द

माळी

१	माळी	माळी
२	माळी	माळियां
३	माळी	माळियां
४	माळीगै	माळियांगै

इत्यादि

(८) नारीजातीय ईकारांत शब्द

काकी

काकी	काकियां
काकी	काकियां
काकी	काकियां
काकीगै	काकियांगै

इत्यादि

(९) नरजातीय उकारांत शब्द

साधु

१	साधु	साधु
२	साधु	साधुआं
३	साधु	साधुआं
४	साधुगै	साधुआंगै

इत्यादि

(१०) नारीजातीय उकारांत शब्द

रितु

रितु	रितुआं
रितु	रितुआं
रितु	रितुआं
रितुगै	रितुआंगै

इत्यादि

(११) नरजातीय ऊकारांत शब्द

भालू

१	भालू	भालू
२	भालू	भालुआं
३	भालू	भालुआं
४	भालूगै	भालुआंगै

इत्यादि

(१२) नारीजातीय ऊकारांत शब्द

बहू

बहू	बहुआं
बहू	बहुआं
बहू	बहुआं
बहूगै	बहुआंगै

इत्यादि

(१६१) सर्वनामारा रूप

	(१) हूं*			(२) तू †		
१	हूं	म्हे,	आपां	तूं	थे	आप
३	मैं	म्हां	आपां	तैं	थां	आप
४	मनै	म्हांनै	आपांनै	तनै	थांनै	आपनै
५	मैंसूं	म्हांसूं	आपांसूं	तैंसूं	थांसूं	आपसूं
६	म्हारो	म्हांरो	आपांरो	थारो	थांरो	आपरो
७	मैंमें	म्हांमे	आपांमें	तैंमें	थांमें	आपमें
८	मैं पर	म्हां पर,	आपां पर	तैं पर	थां पर,	आप पर

	(३) बो		(४) अो	
१	बो	बै (नर)	अो	अै
	बा	बै (नारी)	आ	अै
३	बी बी बण	बां	अी अी अण	आं
४	बी-नै	बांनै	अी-नै	आं-नै
५	बी-सूं	बांसूं	अी-सूं	आं-सूं
६	बी-रो	बां-रो	अी-रो	आं रो
७	बी-में	बां-मे	अी-में	आं-में
८	बी पर	बां पर	अी पर	आं पर
	अथवा		अथवा	
३	उण	उणां	इण	इणां
४	उणनै	उणांनै	इणनै	इणांनै
		इत्यादि		इत्यादि

---

* पांचवी सातवी तथा आठवी विभक्तियामें म्हारैसूं म्हारैमें म्हारै पर तथा म्हांरैसूं म्हांरैमे म्हांरै पर रूप भी हुवै।

† पांचवी सातवी आठवी विभक्तियामे थारैसूं थारैमे थारै पर तथा थांरैसूं थांरैमे थांरै पर रूप भी हुवै।

अथवा

१	वी	व्या
४	वीनै	व्यानै
		इत्यादि

अथवा

१	जिण	जिणा
४	जिणनै	जिणानै
		इत्यादि

अथवा

तिण	तिणा
तिणनै	तिणानै
	इत्यादि

जिको (जको)

१	जिको (नर) / जिका (नारी)	जिका जिके
३	जिका / जिकै	जिका
४	जिकानै / जिकैनै	जिकानै
		इत्यादि

तिको

तिको (नर) / तिका (नारी)	तिका तिके
तिका / तिकै	तिका
तिकानै / तिकैनै	तिकानै
	इत्यादि

जिकी (जकी)

१	जिकी	जिकया
३	जिकी	जिकया
४	जिकीनै	जिकयानै

तिकी

तिकी	तिकया
तिकी	तिकया
तिकीनै	तिकयानै

पाठ १६

संज्ञारो पद-परिचय

(१६२) नामरो पद-परिचय—

(१) भेद (व्यक्तिवाचक जातिवाचक भाववाचक)

(२) जाति (नरजाति नारीजाति)

(३) वचन (एकवचन अनेकवचन)

(४) विभक्ति (पहली दूसरी तीसरी चौथी पांचवी छठी सातवीं आठवीं)

(५) कारक (कर्ता कर्म करण संप्रदान अपादान संबंध अधिकरण संबोधन)

(६) संबंध—कारकरै अनुसार

१ कणांरी क्रियारो या कृदंतरो कर्ता कर्म करण आदि ।

२ कणांरी क्रियारो या कृदंतरो पूरक ।

३ कणांरै नामरो समानाधिकरण ।

४ संबंध कारक हुवै तो कणांरै शब्दरो भेदक ।

५ संबोधन कारक हुवै तो संबंध नहीं बतायीजै ।

(१६३) सर्वनामरो पद-परिचय—

(१) भेद (पुरुषवाचक निजवाचक निश्चयवाचक अनिश्चयवाचक प्रश्नवाचक संबंधवाचक)

( ) पुरुष (उत्तम मध्यम अन्य)

(३) जाति (४) वचन (५) विभक्ति (६) कारक (७) संबंध ।

टिप्पणी—सर्वनाम मे संबोधन कारक नहीं हुवै ।

(११४) विशेषणरी पद-परिचय—

(१) भेद (गुणवाचक परिमाणवाचक संख्यावाचक सार्वनामिक)

(२) जाति (३) वचन

(४) संबंध—जणांरी विशेष्य (नाम या सर्वनाम) री विशेषता बतावै।

(११५) उदाहरण—

(१)

खरगोश बोलियो—हे स्वामी! इणमें न तो म्हारो कसूर है और न दूजा जीवांरो इणरो कारण नाहर सो सुणो। जद सिंह कह्यौ कै बेगो कह।

खरगोश — संज्ञा जातिवाचक नाम नरजाति एकवचन पहली विभक्ति कर्ता कारक बोलियो क्रियारो कर्ता।

स्वामी — संज्ञा जातिवाचक नाम नरजाति एकवचन दूजी विभक्ति संबोधन कारक।

इणमें — संज्ञा निश्चयवाचक सर्वनाम अन्यपुरुष नरजाति एकवचन सातवीं विभक्ति अधिकरण कारक है क्रियारो अधिकरण।

म्हारो — संज्ञा पुरुषवाचक सर्वनाम उत्तमपुरुष नरजाति एकवचन छठी विभक्ति संबंध कारक कसूर संज्ञारो भेदक।

कसूर — संज्ञा भाववाचक नाम नरजाति एकवचन पहली विभक्ति कर्ता कारक है क्रियारो कर्ता।

इणरो — संज्ञा निश्चयवाचक सर्वनाम अन्यपुरुष नरजाति अेकवचन छठी विभक्ति संबंध कारक कारज भेदरो भेदक ।

कारज — संज्ञा भाववाचक नाम नरजाति अेकवचन पहली विभक्ति, कर्म कारक करू क्रियारो कर्म ।

मो — संज्ञा निश्चयवाचक सर्वनाम अन्यपुरुष नरजाति अेकवचन पहली विभक्ति कर्म कारक सुणो क्रियारो कर्म ।

आप — संज्ञा पुरुषवाचक सर्वनाम मध्यमपुरुष नरजाति बहुवचन (आदरार्थ) पहली विभक्ति, कर्ता कारक सुणो क्रियारो कर्ता ।

सिव — संज्ञा जातिवाचक नाम नरजाति अेकवचन पहली विभक्ति, कर्ता कारक कही क्रियारो कर्ता ।

(२)

अब कुण है जको म्हारी बराबरी करै ?

कुण — संज्ञा प्रश्नवाचक सर्वनाम अन्यपुरुष नरजाति अेकवचन पहली विभक्ति कर्ता कारक है क्रियारो कर्ता ।

जको — संज्ञा संबंधवाचक सर्वनाम अन्यपुरुष नरजाति अेकवचन पहली विभक्ति कर्ता कारक करै क्रियारो कर्ता ।

म्हारी — संज्ञा पुरुषवाचक सर्वनाम नरजाति अेकवचन छठी विभक्ति, संबंधकारक बराबरी भेदरो भेदक ।

बराबरी — संज्ञा भाववाचक नाम नारीजाति अेकवचन पहली विभक्ति कर्मकारक करै क्रियारो कर्म ।

(३)

बाडामे बैठी भगती इण अभिमानी माछररा वचन सुणिया ।

बाडामे — संज्ञा जातिवाचक नाम नरजाति अेकवचन सातवीं विभक्ति, अधिकरण कारक बैठी क्रियारो अधिकरण ।

मोटी — संज्ञा मूल-रूपरो विशेषण नारीजाति अेकवचन मकड़ी विशेष्यरी विशेषता बतावै ।

इण — संज्ञा सार्वनामिक विशेषण नरजाति अेकवचन मास्टर विशेष्यरी विशेषता बतावै ।

अभिमानी — संज्ञा गुणवाचक विशेषण नरजाति अेकवचन मास्टर विशेष्यरी विशेषता बतावै ।

(४)

म्हारो भाई रामराम पाठशालामें अध्यापक है ।

म्हारो — संज्ञा पुरुषवाचक सर्वनाम उत्तम पुरुष अेकवचन छठी विभक्ति संबंधकारक भाई भेळो संबंध ।

भाई — संज्ञा जातिवाचक नाम नरजाति अेकवचन पहली विभक्ति कर्ता कारक है क्रियारो कर्ता ।

रामराम — संज्ञा व्यक्तिवाचक नाम नरजाति अेकवचन पैली विभक्ति कर्ता कारक भाई शब्दरो समानाधिकरण है क्रियारो कर्ता ।

अध्यापक — संज्ञा जातिवाचक नरजाति अेकवचन पहली विभक्ति है क्रियारो पूरक ।

पाठ २१

क्रियारा भेद

(१०४) क्रियारा दो भेद हुवै—(१) सकर्मक (२) अकर्मक ।

(१०५) जठै *क्रियारो व्यापार कर्तामें और क्रियारो फळ कर्ममें* रैवै उठै सकर्मक तथा जठै क्रियारो व्यापार और फळ दोनूं कर्तामें रैवै उठै अकर्मक हुवै ।

(१०६) शरीररै अंगारी (अथवा मन-सहित इंद्रियारी) चेष्टावनै व्यापार कैवै । जियां—

(१) हाथी उठियो ।

अठै हाथी पगांसूं ऊभो हुवणरी चेष्टा करी ।

(२) बाळक रोटी जीमियो ।

अठै बाळक रोटीनै मूंढेमें घालणरी और मूंढेमें दांतांसूं चबावणरी चेष्टा करी ।

(३) नवराम ढेकरानै पटकियो ।

अठै नवराम ढेकरानै उठा'र फेंकणरी चेष्टा करी ।

(४) गोपाळ बजारसूं फळ लायो ।

अठै गोपाळ बजार जावणरी अठैसूं फळ लेवणरी और उठायनै लावणरी चेष्टावां करी ।

(५) गोवावरी चाली ।

अठै गोवावरी पगांसूं चालणरी चेष्टा करी ।

(६) माळी पेड सींच्यो ।

अठै माळी पाणी लावणरी और पेडरै थाळेमें नाखणरी चेष्टावां करी ।

(१७७) चेष्टारै परिणामनै फळ कैवै। जिमा—

(१) बामण रोटी पकायी।

अठै बामण रोटीनै आग पर नाखण और उणनै उथळण आदिरी चेष्टावां करी जद रोटी पकी। पकणो फळ है।

(२) गजराज देवकरणनै पटकियो।

अठै गजराजरी चेष्टारा फळ ओ हुयो कै देवकरण जमी मार्थ पडियो। जमी मार्थ पडणो अर्थात पटकीजणो फळ है।

(३) माळी पेड सींच्यो।

अठै माळीरी चेष्टारो ओ फळ हुयो के पेड सींचीजियो। सींचीजणो फळ है।

(४) गोवाळ बजारसूं फळ लायो।

अठै गोवाळरी चेष्टावांरो ओ फळ हुयो कै फळ बजारसूं घरमें आया। फळांरो बजारसूं आवणो अर्थात लायीजणो फळ है।

(५) गोदावरी चाली।

अठै गोदावरीरी चेष्टारो ओ फळ हुयो कै गोदावरी अेक स्थानसूं दूसरै स्थान तांई गयी अर्थात गोदावरी सूं चालीजियो। चालीजणो फळ है।

(६) हाथी उठियो।

अठै हाथीरी चेष्टारो ओ परिणाम हुयो कै हाथी ऊभो हुयो। हाथीरो ऊभो हुवणो फळ है।

(१७) (१) बामण रोटी पकायी।

अठै चेष्टा करी बामण अर व्यापार करतामें है। चेष्टारै फळस्वरूप रोटी पकी पकणो फळ रोटीमें हुवा।

(२) रामू किसनैनै मारियो।

अठै मारणरी चेष्टा करी रामू और मारीजणो फळ मिळियो किसनैनै।

(३) माळी कलम सींचै।

अठै सींचणरो व्यापार माळी करै और फळ सींचीजणो पेड़नै मिलै।

पकड़णो मारणो सींचणो इण क्रियावांमें व्यापार कर्तामें और फळ कर्ममें रैवै इण वास्तै वै सकर्मक है।

(१७९) (१) गंगा उठी।

अठै उठणरी चेष्टा गंगा करै और उठीजणो फळ भी गंगानै ही मिलै अतः व्यापार और फळ दोनूं कर्तामें है।

(२) राजा चालै।

अठै चालणरो व्यापार राजा करै और ओक स्थानसूं दूसरै स्थान तांई पूगणो फळ भी राजानै ही मिलै।

(३) मजूर घरमें बड़ियो।

अठै घरमें बड़णरो व्यापार मजूर करियो और घरमें बड़ीजणो रो फळ भी मजूरनै ही मिलियो।

उठणो चालणो बड़णो इण क्रियावांमें व्यापार और फळ दोनूं ही कर्तामें रैवै इण वास्तै वै अकर्मक है।

पाठ २४

प्रयोग

(११३) प्रयोग बताई कै क्रिया किणरै अनुसार हुई अर्थात क्रियाए वचन जाति और पुरुषमें किणरै अनुसार परिवर्तन हुई ।

(११४) प्रयोग तीन हुवै—(१) कर्तरि प्रयोग (२) कर्मणि-प्रयोग (३) भावे-प्रयोग ।

(११५) क्रिया कर्तारै अनुसार हुवै जद कर्तरि प्रयोग—

वचन— घोड़ो भाग्यो । घोड़ा भाग्या ।
तूं जासी । थे जासो ।
मैं काम करतो हो । म्हें काम करता हा ।

जाति— घोड़ो दूबियो । घोड़ी दूबी ।
हूं काम करै हो । हूं काम करै ही ।

पुरुष— वो करै । तू करै । हूं करूं ।
वै जासी । थे जासो । म्हे जासां ।

(११६) क्रिया कर्मरै अनुसार हुवै जद कर्मणि-प्रयोग । कर्मणि प्रयोग कर्मवाच्यमें तथा जिण धातुवांरा रूप भूतकृदन्त सूं बणै उण वाक्यमें कर्तृवाच्य में भी हुवै ।

(क) कर्मवाच्य—

छोरासूं आंबो खाईजियो ।
छोरासूं आंबा खाईजिया ।
छोरासूं रोटी खाईजी ।

(ख) कर्तृवाच्य

छोरै आंबो खायो । छोरां आंबो खायो ।
छोरै आंबा खाया । छोरां आंबा खाया ।

छोरै रोटी खायी। छोरां रोटी खायी।

छोरी आंबो खायो। छोरियां आंबो खायो।
छोरी आंबा खाया। छोरियां आंबा खाया।
छोरी रोटी खायी। छोरियां रोटियां खायी।

(१९७) क्रिया कर्ता और कर्म दोनां रै ही अनुसार नहीं हुवै पण बराबर एकवचन नर-जाति अन्य-पुरुष बणी रैवै जद भावे-प्रयोग। भावे प्रयोग भाववाच्य में हुवै।

म्हासूं कोनी खाईजै।
तैसूं कोनी उठीजैला।
उणसूं भी कोनी उतरीजियो।

(२) राजा बामणनै सेनापति बणायो।

अठै बामण और सेनापति न्यारा-न्यारा व्यक्ति नहीं बामण ही सेनापति है।

(३) गोमती रोटी-नै खासी।

अठै गोमती और रोटी न्यारा-न्यारा पदार्थ है गोमती रोटी नहीं है।

पाठ २४

प्रयोग

(११३) प्रयोग बतावै कै क्रिया किणरै अनुसार हुवै अर्थात क्रियारा वचन जाति और पुरुषमें किणरै अनुसार परिवर्तन हुवै ।

(११४) प्रयोग तीन हुवै—(१) कर्तरि-प्रयोग (२) कर्मणि-प्रयोग (३) भावे-प्रयोग ।

(११५) क्रिया कर्तारै अनुसार हुवै जद कर्तरि प्रयोग—

वचन—	छोरो भाग्यो ।	छोरा भाग्या ।
	तूं जासी ।	थे जास्यो ।
	बैन काम करती ही ।	बैनां काम करती ही ।
जाति—	छोरो कूदियो ।	छोरी कूदी ।
	हूं काम करै हो ।	हूं काम करै ही ।

पुरुष— बो करै । तूं करै । हूं करूं ।
बै जासी । थे जास्यो । म्हे जासां ।

(११६) क्रिया कर्मरै अनुसार हुवै जद कर्मणि-प्रयोग । कर्मणि प्रयोग कर्मवाच्यमें तथा जिण कालांरा रूप भूतकृदन्त सूं बणै उण कालांमें कर्तृ वाच्य में भी हुवै ।

(क) कर्मवाच्य—

छोरासूं आंबो खाईजियो ।
छोरासूं आंबा खाईजिया ।
छोरासूं रोटी खाईजी ।

(ख) कर्तृ वाच्य—

छोरै आंबो खायो । छोरां आंबो खायो ।
छोरै आंबा खाया । छोरां आंबा खाया ।

छोरै रोटी खाधी । छोरां रोटी खाधी ।

छोरी आंबो खायो । छोरियां आंबो खायो ।
छोरी आंबा खाया । छोरियां आंबा खाया ।
छोरी रोटी खाधी । छोरियां रोटियां खाधी ।

(१६७) क्रिया कर्त्ता और कर्म दोनारै ई अनुसार नहीं हुवै पण बराबर अेकवचन नर-जाति अन्य-पुरुष बणी रैवै जद भावे-प्रयोग । भावे-प्रयोग भाववाच्य में हुवै ।

म्हांसू कोनी आवीजै ।
तैंसू कोनी उठीजैला ।
उणसू सीधै कोनी उतरीजियो ।

पाठ २५

अर्थ

(१९८) अर्थ बतावै कै क्रिया किसो भाव सूचित करै है।

(१९९) अर्थ पांच हुवै—(१) निश्चयार्थ (२) आज्ञार्थ (३) संभावनार्थ (४) संदेहार्थ (५) संकेतार्थ।

(२) आज्ञारो भाव पाईजै जद आज्ञार्थ—

तू आ।　　थे आवो।

तू काम आवे। थे काम आवीजो।

(२ १) संभावना इच्छा आशीर्वादरो भाव पाईजै जद संभावनार्थ—

हूं जाऊं।　　म्हे ओ काम करां।

तू फळै-फूलै।　　थे सुख पावो।

स्यात् वो घरे जावै। कदास मैं आज आ ज्यावै।

(२ २) संदेहरो भाव पाईजै जद संदेहार्थ—

पुजारी पूजा करतो हुसी।

भाई दुकान गयो हुसी।

(२ ३) जद ओ भाव पाईजै कै अेक काम हुवै तो दूसरो हुवै अर्थात् अेक कामरो हुवणो दूसरै कामरै हुवण माथै आश्रित रैवै जद संकेतार्थ—

विद्यार्थी पढतो तो पूछीजतो।

रोग्यां करी हुती तो बीमता।

मे बरससी तो मेहो हुसी।

माटो मावै तो रमाई हुवै।

(२ ४) कोई विशेष भाव नहीं हुवै और कोरी बात कहीजै जद निश्चयार्थ—

विद्यार्थी पढै है।

मेह बरसियो।

परीक्षा हुसी।

(२ ५) तीनूं काळांमें ई पांचूं अर्थ हुवै पण पांचूं अर्थांरा न्यारा न्यारा रूप तीनूं काळांमें नहीं हुवै। जिण अवसरा न्यारा रूप नहीं हुवै उण अर्थनै बताबण वास्तै दूसरा किणी अर्थरा रूप बापरीजै। जियां—

वर्तमान-काळमें संकेतार्थ—

आटो मावै तो रसोई करां।

पढै तो पास हुवै।

भविष्यकाळ में संकेतार्थ—

पढसी तो पास हुसी।

भविष्यकाळ में संदेहार्थ—

रामू कदाचित् रोटी खासी।

(२ ६) किसा अर्थ में किसा-किसा काळांरा रूप बणै आ बात नीचै सारणीमें बताबी है—

अर्थ	भविष्य	वर्तमान	भूत
निश्चय	सामान्य-भविष्य	सामान्य-वर्तमान	सामान्य-भूत
	×	×	आसन्न भूत
		×	अपूर्ण भूत
	×	×	पूर्ण भूत
संभावना	संभाव्य भविष्य	संभाव्य-वर्तमान	संभाव्य-भूत
संदेह	×	संदिग्ध-वर्तमान	संदिग्ध-भूत
संकेत	×	×	सामान्य-संकेत भूत
	×	×	अपूर्ण-संकेत भूत
	×	×	पूर्ण-संकेत भूत
आज्ञा	आज्ञा भविष्य	आज्ञा-वर्तमान	×

(२ ७) किसा काळांमें किसा-किसा अर्थांरा रूप हुवै आ बात नीचै सारणीमें बताबी है—

काल		निश्चय	संकेत	संभावना	संदेह	आज्ञा
भूत	सामान्य	सामान्य-भूत	संकेत भूत	संभाव्य-भूत	संदिग्ध भूत	×
	अपूर्ण	अपूर्ण-भूत	अपूर्ण-संकेत भूत	×	×	×
	पूर्ण	पूर्ण-भूत	पूर्ण-संकेत-भूत	×	×	×
	आसन्न	आसन्न-भूत	×	×	×	×
वर्तमान	सामान्य	सामान्य वर्तमान	× ×	संभाव्य वर्तमान	संदिग्ध वर्तमान	आज्ञा वर्तमान
भविष्य	सामान्य	सामान्य- भविष्य	×	संभाव्य भविष्य	×	आज्ञा भविष्य

पाठ २६

काळ

(२०८) काळ क्रियारै हुवणरो समय बतावै ।

(२०९) मुख्य काळ तीन है—(१) भूत (२) वर्तमान (३) भविष्य ।

(२१०) बीत चूकी वो भूत-काळ । जियां—

बादळ बरसियो ।

(२११) अबार चालै वो वर्तमान-काळ । जियां—

बादळ बरसै है ।

(२१२) अबै आसी वो भविष्य-काळ । जियां—

बादळ बरसैला ।

(२१३) राजस्थानी व्याकरणमें भूतकाळरा ९ वर्तमानरा ४ तथा भविष्यरा ३ भेद हुवै । इण तरां सारा काळ १६ हुवै ।

(२१४) भूतकाळरा भेद—

१ निश्चयार्थ—	१ सामान्य-भूत	बादळ बरसियो
	२ आसन्न भूत	बादळ बरसियो है
	३ पूर्ण-भूत	बादळ बरसियो हो
	४ अपूर्ण भूत	बादळ बरसतो हो
२ संभावना अर्थ —	५ संभाव्य भूत	बादळ बरसियो हुवै
३ संदेहार्थ—	६ संदिग्ध भूत	बादळ बरसियो हुसी
४ संकेतार्थ—	७ संकेत-भूत	बादळ बरसतो
	८ संकेत भूत	बादळ बरसतो हुतो
	९ पूर्ण भूत	बादळ बरसियो हुतो

(२१५) वर्तमान-काळरा भेद—

१ सामान्यार्थ—	१ सामान्य-वर्तमान	बादळ बरसै है
२ सम्भावनार्थ—	२ संभाव्य-वर्तमान	बादळ बरसतो हुवै
३ संदेहार्थ—	३ संदिग्ध-वर्तमान	बादळ बरसतो हुसी
४ आज्ञार्थ—	४ आज्ञा-वर्तमान	बादळ ! तू बरस

(२१६) भविष्य-काळरा भेद—

१ सामान्यार्थ—	१ सामान्य भविष्य	बादळ बरसैला
२ संभावनार्थ—	२ संभाव्य-भविष्य	बादळ बरस
३ आज्ञार्थ—	३ आज्ञा भविष्य	बादळ ! तू बरस्जे बादळ ! तू बरसीजे बादळ ! तू बरसजे

(२१७) सामान्य-भूत—जद औ निश्चय नहीं हुवै कै काम थोड़ी वार पैली पूरो हुयो कै घणी वार पैली।

आसन्न भूत—बतावै कै काम अबार, थोड़ी वार पैलीज पूरो हुयो है।

पूर्ण-भूत—बतावै कै काम घणो पैली हुयो हो।

अपूर्ण भूत—बतावै कै काम आरंभ हो चूको हो पण पूरो नहीं हुयो हो।

संकेत भूत—आ बात बतावै कै अेक काम हुतो तो दूसरो हुतो।

सामान्य-वर्तमान—बतावै कै काम हुवै है अथवा हुया करै है।

सामान्य भविष्य—बतावै कै काम हाल आरंभ नहीं हुयो आगै हुसी।

संभाव्य भूत—भूतकाळमें कामरै हुवणरी संभावना बतावै।

संभाव्य-वर्तमान—वर्तमानमें कामरै हुवणरी संभावना बतावै।

संभाव्य भविष्य—भविष्यमें कामरै हुवणरी संभावना अथवा इच्छा बतावै।

संदिग्ध भूत—भूतकाळमें कामरै हुवणमें संदेह बतावै।

संदिग्ध-वर्तमान—वर्तमानमें कामरै हुवणमें संदेह बतावै।

आज्ञा-वर्तमान—मे अबार काम करणरी आज्ञा पावीजै।

आज्ञा भविष्य—मे भविष्यमें काम करणरी आज्ञा पावीजै।

(२१०) संभाव्य भविष्य अपभ्रंशरा सामान्य-वर्तमानसूं बणियो है इण वास्तै घणी वार सामान्य-वर्तमानरा अर्थमें भी आवै।

(२११) आज्ञारा दोनूं काळ मध्यम-पुरुषमें ही हुवै।

(२१२) तात्काळिक वर्तमान-काळ और तात्काळिक भूत-काळरो प्रयोग घणो कम हुवै उणा री जागा प्राय-कर सामान्य-वर्तमान और अपूर्णभूत वापरीजै।

पाठ २७

क्रियारी रूप-साधना

(२२१) रूप-साधनारी दृष्टिसूं काळारा तीन विभाग करीजै—

(१) जका धातुरै आगै प्रत्यय लगायनैसूं बणै ।

(२) जका वर्तमान-कृदन्तसूं बणै ।

(३) जका भूत-कृदन्तसूं बणै ।

(२२२) काळारा प्रत्यय इण भांत है—

विभाग १

काळ	पुरुष	प्रत्यय	
		एकवचन	अनेकवचन
(१) आज्ञा-वर्तमान	मध्यम	×	औ
(२) आज्ञा भविष्य		इये ये जे ईज	इयो यो जो ईजो
(३) सामान्य-भविष्य	अन्य मध्यम उत्तम	ऐ ऐ ऊं	ऐं ओ आं
(४) सामान्य भविष्य (२)	अन्य मध्यम उत्तम	एला ऐला ऊंला	ऐला ओला आंला
(५) सामान्य भविष्य (१)	अन्य मध्यम उत्तम	सी सी सूं	सी सो सां

(६) सामान्य-वर्तमान	अन्य मध्यम उत्तम	ऐ है ऐ है ऊं हूं	ऐ है ओ हो आं हां
(७) अपूर्ण भूत (१)	तीनूं पुरुष (नर जाति) (नारी जाति)	 ऐ हो ऐ ही	 ऐ हा ऐ ही

विभाग २

काळ	जाति	प्रत्यय	
		एकवचन	अनेकवचन
(१) संकेत-भूत	नर-जाति नारी-जाति	तो ती	ता ती त्या
(२) अपूर्ण-संकेत-भूत	नर नारी	तो हुतो ती हुती	ता हुता ती हुती
(३) अपूर्ण-भूत (२)	नर नारी	तो हो ती ही	ता हा ती ही
(४) सामान्य-वर्तमान	नर	तो हुवै तो हुवै तो हुऊं	ता हुवै ता हुवो ता हुवां
	नारी	ती हुवै ती हुवै ती हुऊं	ती हुवै ती हुवो ती हुवां
(५) संदिग्ध-वर्तमान	नर	तो हुसी तो हुसी तो हुसूं	ता हुसी ता हुसो ता हुसां
	नारी	ती हुसी ती हुसी ती हुसूं	ती हुसी ती हुसो ती हुसां

विभाग १

१ सामान्य-भूत	नर नारी	हमो मो ई	हमा या ई
२ पूर्ण भूत	नर नारी	हमो हो ई ही	हमा हा ई ही
३ पूर्ण-संकेत-भूत	नर नारी	हमा हुता ई हुती	हमा हुता ई हुती
४ आसन्न भूत	नर नारी	हमो है ई है	हमा है ई है
५ सम्भाव्य-भूत	नर नारी	हमो हुवे ई हुवे	हमा हुवे ई हुवे
६ संदिग्ध भूत	नर नारी	हमो हुसी ई हुसी	हमा हुसी ई हुसी

(२२३) नीचे बताया ५ कालमे वचन और पुरुषरै अनुसार रूप भेद हुवै—सामान्य-भविष्य सम्भाव्य भविष्य सामान्य-वर्तमान आज्ञा भविष्य आज्ञा-वर्तमान ।

(२२४) नीचे बताया ११ कालमे वचन और जातिरै अनुसार रूप-भेद हुवै—अपूर्ण भूत (१) तथा (२) संकेत-भूत अपूर्ण-संकेत-भूत सामान्य-भूत पूर्ण भूत आसन्न भूत सम्भाव्य-भूत संदिग्ध भूत पूर्ण-संकेत भूत ।

(२२५) नीचे बताया दो कालमे वचन जाति और पुरुष तीनारै अनुसार रूप भेद हुवै—सम्भाव्य-वर्तमान संदिग्ध-वर्तमान ।

(२२६) ऊपर बताया प्रत्यय धातुरै आगै जुड़ै ।

(२२७) धातु दो तरांरा हुवै—

(१) व्यंजनान्त अकारै अन्त में अनुच्चरित अ हुवै। जियां—कर उठ चाल चल माग लाग बैस।

( ) स्वरान्त अकारै अन्त में अ टाळनै दूजा स्वर हुवै। जियां—खा पी मू वे धो।

(२२८) कई धातु स्वरान्त और व्यंजनान्त दोनूं हुवै। जियां—

कै और कह।
रै और रह।
सै और सह।
बै और बह।

(२२९) व्यंजनान्त धातुरै आगै स्वरादि अथवा यकारादि प्रत्यय हुवै जद अन्तिम अनुच्चरित अ रो सहसा लोप हु ज्यावै व्यंजनादि प्रत्यय हुवै तो लोप नहीं हुवै—

फिर+इये =फिरिये।
फिर+इयो=फिरियो।
फिर+यै =फिर्यै।
फिर+यो =फिर्यो।
फिर+ऐ =फिरै।

फिर+ता =फिरता।
फिर+जे =फिरजे।

(२३०) स्वरान्त धातुरै आगै इकारादि प्रत्यय आवै जद प्रत्ययरै आदि इकाररो लोप हु ज्यावै—

खायै। खाया।
आया। आया।
लियो। लिया।

(२११) व्यंजनान्त धातुरै आगै इकारादि प्रत्यय आगै जद प्रत्ययरै आदि इकार रो विकल्प सूं लोप हुवै—

कर+इये=करिये करये
कर+इयो=करियो करयो।

(२१२) स्वरान्त धातुरै आगै ईकारादि प्रत्यय आवै जद य रो आगम हुवै जियां—

खा+ईजे=खायीजे
खा+ई=खायी।

(२१३) धातु ईकारान्त हुवै तो य रो आगम नहीं हुवै अंतिम ई रो लोप हुवै—

पी+ई=पी (पीयी)
जी+ई=जी (जीयी)।

(२१४) ईकारान्त और ऊकारान्त धातुरो अन्तिम स्वर, स्वरादि प्रत्यय लागणैसूं पूर्व कठै-कठै ह्रस्व हुय्यावै—

पी+इयो=पियो पीयो
जी+इयो=जियो जीयो
मू+इयो=मुयो मूयो
मू+ई=मुयी मूयी
जी+ई=जियी जीयी।

(२१५) हु धातुरो स्वर, प्रत्ययलागणासूं पूर्व नित्य ह्रस्व हुय्यावै—

हु+इये=हुये
हु+इयो=हुयो
हु+तो=हुतो
हु+सी=हुसी
हु+अै=हुवै

पाठ २८

क्रियारा रूप

कर्तृ-वाच्य

(२४१) व्यंजनान्त धातु फिर

काल	पुरुष	वचन	
		एक-वचन	अनेक-वचन
१ आज्ञा-वर्तमान	म	फिर	फिरो
२ आज्ञा-भविष्य	म	फिरिजे फिरय फिरजे फिरीजे	फिरिया फिरया फिरजो फिरीजो
३ सामान्य-भविष्य (१)	अ म उ	फिरसी फिरसी फिरसूं	फिरसी फिरसो फिरसां
४ संभाव्य-भविष्य	अ म उ	फिरै फिरै फिरूं	फिरै फिरो फिरां
५ सामान्य-भविष्य (२)	अ म उ	फिरैला फिरैला फिरूंला	फिरैला फिरोला फिरांला
६ सामान्य-वर्तमान	अ म उ	फिरै है फिरै है फिरूं हूं	फिरै है फिरो हो फिरां हां

७ अपूर्ण भूत (१)	न	फिरै हो	फिरै हा
	ना	फिरै ही	फिरै ही
८ संकेत भूत	न	फिरतो	फिरता
	ना	फिरती	फिरती
			फिरत्या
९ अपूर्ण भूत (२)	न	फिरतो हो	फिरता हा
	ना	फिरती ही	फिरती ही
			फिरत्यां ही
१० अपूर्ण-संकेत भूत	न	फिरतो हुतो	फिरता हुता
	ना	फिरती हुती	फिरती हुती
			फिरत्यां हुत्यां
११ सम्भाव्य-वर्तमान	अ	फिरतो हुवै	फिरता हुवै
	म	हुवै	हुवो
	उ	हुवूं	हुवां
	अ	फिरती हुवै	फिरती हुवै
	म	हुवै	हुवो
	उ	हुवूं	हुवां
१२ संदिग्ध-वर्तमान	अ	फिरतो हुसी	फिरता हुसी
	म	हुसी	हुसो
	उ	हुसूं	हुसां
	अ	फिरती हुसी	फिरती हुसी
	म	हुसी	हुसो
	उ	हुसूं	हुसां
१३ सामान्य भूत	न	फिरियो फिरयो	फिरिया फिरया
	ना	फिरी	फिरी

१४ आसन्न-भूत	न मा	फिरियो है फिरी है	फिरिया है फिरी है
१५ पूर्ण-भूत	न मा	फिरियो हो फिरी ही	फिरिया हा फिरी ही
१६ पूर्ण-संकेत-भूत	न मा	फिरियो हुतो फिरी हुती	फिरिया हुता फिरी हुती
१७ सामान्य भूत	न मा	फिरियो हुवै फिरी हुवै	फिरिया हुवै फिरी हुवै
१८ संदिग्ध-भूत	न मा	फिरियो हुसी फिरी हुसी	फिरिया हुसी फिरी हुसी

नोट—सकर्मक क्रियाओं रा रूप भी इणी तरै हुवै ।

(२५४) स्वरान्त धातु जा —

काल	पु	ऐकवचन	अनेकवचन
१ आज्ञा-वर्तमान	म	जा	जावो
२ आज्ञा-भविष्य	म	जाय जाजे जायीजे	जावा जाजो जायीजो
३ सामान्य भविष्य	अ म उ	जासी जासूं	जासी जासो जासां
४ संभाव्य-भविष्य	अ म उ	जावै जाऊं	जावै जावो जावां

१५	पूर्ण-भूत	न ना	लायो हो लायी ही	लाया हा लायी ही
१६	पूर्ण-संकेत-भूत	न ना	लायो हुतो लायी हुती	लाया हुता लायी हुती
१७	संभाव्य-वर्तमान	न ना	लायो हुवै लायी हुवै	लाया हुवै लायी हुवै
१	संदिग्ध-वर्तमान	न ना	लायो हुसी लायी हुसी	लाया हुसी लायी हुसी

(२४५) अकर्मक क्रियारा रूप भी इणी तरां हुवै ।

(२४६) कई-अेक विशेष रूप—

(१) जाणा धातुरा आज्ञा-वर्तमान अेकवचनरा रूप—
जा जाव ।

(२) जाणा धातुरा सामान्य भूतरा रूप—
गयो गया
गयी गयी गया ।

(३) अेकारान्त धातुरा बहुत-सा विशेष रूप बणै इण वास्तै नीचै अेकारान्त धातु रैवणो-रा मुख्य-मुख्य रूप दिरीजै है—

आज्ञा-वर्तमान-अेकवचन	रै	रह
अनेकवचन	री रैवो रवो	रहो
आज्ञा-भविष्य	रैजै रवे रिये रीजे	रहजे रहिजे
	रैजा रवा रिया रीजा	रहजा रहिजा
सामान्य भविष्य १	रैसी	रहसी
संभाव्य भविष्य	रै रैवै रवै	रहै
सामान्य भविष्य २	रैला रैवैला रवैला	रहैला

सामान्य-वर्तमान	रै है रैवै है रवै है	रही है
अपूर्ण भूत १	रै हो रैवै हो रवै हो	रवै हो
	रै ही रैवै ही रवै ही	रहै ही
संकेत भूत	रैता रैवतो	रहतो
	रैती रैवती	रहती
सामान्य भूत	रैयो रयो रियो रीयो	रह्यो रहियो
	रैया रया रिया रीया	रह्या रहिया
	रैयी रयी री*	रही

* इसो रूप केवळ रैण धातुरा बणै देण लेण मण आदि दूजी एकारान्त धातवांरा नहीं बणै।

पाठ २१

कर्मवाच्य और भाववाच्य

(२४७) सकर्मक क्रियाओ कर्म-वाच्य तथा अकर्मक क्रियाओ भाव वाच्य हुवें।

(२४८) कर्मवाच्यमें कर्तृवाच्य जितना पूरा रूप हुवें। भाववाच्य में हरेक कालमें केवळ अेक-अेक रूप हुवें।

(२४९) कर्मवाच्य और भाववाच्य दो तरहका है—

(१) पुराना अथवा अविशिष्ट।

(२) नया अथवा विशिष्ट।

(२५) पुराना कर्मवाच्य और भाववाच्य संस्कृत प्राकृत तथा अपभ्रंश आया है नया हिन्दी आदिके प्रमाणमें हालमें ही प्रयोगमें आकर जमा है।

(२५१) अविशिष्ट कर्मवाच्य अथवा भाववाच्यकी धातु कर्तृवाच्य की धातुके आगे ईअ प्रत्यय जोड़्याम् बने—

कर	+	ईअ	=	करीअ	करीअणो
देख	+	ईअ	=	देखीअ	देखीअणो
जीव	+	ईअ	=	जीवीअ	जीवीअणा
जी	+	ईअ	=	जियीअ	जियीअणो
आ		अ	=	आयीअ	आयीअणा
जा		ईअ	=	जायीअ	जायीअणा
पी	+	ईअ	=	पीअ	पीअणो
ले	+	ईअ		लिवीअ	लिवीअणो
दे	+	ईअ		दिवीअ	दिवीअणा

सामान्य-भविष्य	करीजै करीजै करीजूं	करीजै करीजो करीजां	आवीजै
सामान्य भविष्य (२)	करीजैला	करीजैला	आवीजैला
सा वर्तमान	करीजै है	करीजै है	आवीजै है
अपूर्ण भूत (१)	करीजै हो करीजै ही	करीजै हा करीजै ही	आवीजै हो
संकेत भूत	करीजता करीजती	करीजता करीजती	आवीजतो
अपूर्ण भूत (२)	करीजतो हो करीजती ही	करीजता हा करीजती ही	आवीजतो हो
अपूर्ण-संकेत भूत	करीजतो हुतो करीजती हुती	करीजता हुता करीजती हुती	आवीजता हुतो
संभाव्य-वर्तमान	करीजतो हुवै करीजती हुवै	करीजता हुवै करीजती हुवै	आवीजता हुवै
संदिग्ध-वर्तमान	करीजतो हुसी करीजती हुसी	करीजता हुसी करीजती हुसी	आवीजता हुसी
सामान्य भूत	करीजिया करीजी	करीजिया करीजी	आवीजियो
आसन्न भूत	करीजिया है करीजी है	करीजिया है करीजी है	आवीजिया है
पूर्ण भूत	करीजिया हा करीजी ही	करीजिया हा करीजी ही	आवीजिया हा

पूर्ण-भव्य भूत	करीजिया हुना करीजी हुनी	करीजिया हुना करीजी हुनी	आयीजिया हुनो
सम्भाव्य भूत	करीजियो हुवै करीजी हुवै	करीजिया हुवै करीजी हुवै	आयीजियो हुवै
संदिग्ध भूत	करीजियो हुसी करीजी हुसी		आयीजियो हुसी

क्रियारो पद-परिचय

(२५५) क्रियारै पद-परिचयमें नीचै बतायी बाता बतावीजै—

(१) भेद (अकर्मक सकर्मक)

(२) वाच्य (कर्तृवाच्य कर्मवाच्य भाववाच्य)

(३) प्रयोग (कर्तरि प्रयोग कर्मणि प्रयोग भावे प्रयोग)

(४) अर्थ (निश्चयार्थ सभावनार्थ संदेहार्थ संकेतार्थ आज्ञार्थ)

(५) काळ (भूत—सामान्य अपूर्ण पूर्ण आसन्न संभाव्य संदिग्ध संकेत अपूर्णसंकेत पूर्ण-संकेत

वर्तमान—सामान्य संभाव्य संदिग्ध आज्ञा-वर्तमान

भविष्य—सामान्य संभाव्य आज्ञा-भविष्य)।

(६) वचन (एक-वचन अनेक-वचन)

(७) जाति (नर-जाति नारी-जाति)

( ) पुरुष (उत्तम मध्यम अन्य)

(९) सबंध (इणरो कर्ता फलाणो कर्म फलाणो पूरक फलाणो है)।

(२५६) उदाहरण—

(१)

महाराज रूपाईरी पुकार सुण उण दोनूं ठगांनै बुलाया।

सुण —क्रिया सकर्मक कर्तृवाच्य पूर्वकालिक कृदन्त इणरो कर्ता महाराज कर्म पुकार तथा समापिका क्रिया बुलाया है।

कयो —क्रिया सकर्मक कर्तृवाच्य कर्मणि प्रयोग निश्चयार्थ सामान्य भूत एक-वचन नर-जाति अन्य-पुरुष इणरो कर्ता मास्टर है कर्म अध्याहृत है।

देखियो —क्रिया सकर्मक कर्तृवाच्य कर्मणि प्रयोग निश्चयार्थ सामान्य भूत एकवचन नर-जाति अन्य-पुरुष इणरो कर्ता वै अध्याहृत है कर्म अध्याहृत है।

करजे —क्रिया सकर्मक कर्तृवाच्य कर्तरि-प्रयोग आज्ञार्थ आज्ञा-भविष्य-काळ एक-वचन नर-जाति मध्यम-पुरुष इणरो कर्ता तूं अध्याहृत है।

पीजैला —क्रिया सकर्मक कर्तृवाच्य कर्तरि प्रयोग निश्चयार्थ सामान्य भविष्य काळ एकवचन नारी-जाति अन्य-पुरुष इणरो कर्ता अध्याहृत है।

पाठ ३१

अव्यय

(२५७) जिण शब्दमें रूपान्तर नहीं हुवै वो अव्यय ।

संज्ञा में जाति वचन और विभक्तियांरै कारण रूपान्तर हुवै अर्थात् कई तरांरा रूप बणै । इणी भांत क्रियामें वाच्य प्रयोग अर्थ काळ, वचन जाति पुरुष रा कता-सारा रूप भेद हुवै पण अव्ययमें किणी तरांरो रूप-भेद नहीं हुवै अर हीं-ज रूप सदा काममें आवै ।

(२५८) कई-अेक विशेषण क्रियाविशेषणांरी भांत बापरीजै उणांमें वचन और जातिरो भेद पाईजै ।

(२५९) अव्ययरा च्यार भेद हुवै—

(१) क्रियाविशेषण—जको क्रियारी कोई विशेषता बतावै ।

(२) नामयोगी—जको संज्ञारै साथै जुड़नै क्रियाविशेषणरो काम करै ।

(३) संयोजक—जको दो वाक्यांनै अथवा कदै-कदै दो शब्दांनै जोड़ै ।

(४) केवळ-प्रयोगी—जिणरो सबंध वाक्यरा दूसरा शब्दांसूं नहीं हुवै और जो मनरा हरख सोग वगैरा भावनै सूचित करै ।

पाठ ३२

क्रियाविसेसण

(२९) क्रियारी कोई विसेसता बतावै बका सब्द क्रियाविसेसण कहीजै। जियां—

(१) विद्यार्थी धीरै चालै है।

अठै धीरै सब्द चालै क्रियारी विसेसता बतावै। कियां चालै है? धीरै चालै है।

(२) राजा काल दिल्ली गयो।

अठै काल सब्द गयो क्रिया-रो काळ (समै) बतावै।

(३) थे कम खायो।

अठै कम सब्द खायो क्रियारो परिमाण बतावै।

(४) थांनी जरूर आसी।

अठै जरूर सब्द आसी क्रियारै हुवणरो निस्चय बतावै।

(५) फूल कोनी तोड़िया।

अठै कोनी सब्द तोड़िया क्रिया नहीं हुई आ बात बतावै।

(३१) कई क्रियाविसेसण विसेसण अथवा दूजा क्रियाविसेसणरी विसेसता बतावै।

(१) मक्खन कमती मीठो है।

( ) चोररी बात साव (या समूची) झूठी है।

(३) घोड़ो घणो धीमे चालै है।

(३२) कई विसेसण क्रियाविसेसण जियां वापरीजै।

(१) घोड़ो धीमो चालै।

(२) घोड़ो घणो तेज भाजै।

सर्वनाम—	यो	ऊ	कुण	जो	सो	वो
स्थानवाचक—	अठै	उठै	कठै	जठै	तठै	वठै
	अेथियै	ओथियै	केथियै	जेथियै		
	इथिये	उथिये	किथिये	जिथिये		
	इथे	उथे	किथे	जिथे	--	
		ओई	कीई			
	अठीनै	उठीनै	कठीनै	जठीनै	तठीनै	वठीनै
	ईंनै	ऊंनै	कींनै	जींनै		वींनै
कालवाचक—	अब		कद	जद	तद	
	अबै		कदे	जदे	तदे	
			कदेई	जदेई		
	इरां		करां	जरां	तरां	
	इणा		कणा	जणा		
	इणै		कणै	जणै		
	इमार					
	अबार					
रीतिवाचक—	इयां		किम्यां	जियां	तियां	वियां
	इयान		कियान	जियान	तियान	वियान
	यूं		क्यूं	ज्यूं	त्यूं	
	यों		क्यों	ज्यों	त्यों	
			क्यूंकर			
			क्योंकर			
			कीकर			

कोरो खाली मात्र केवळ सिरफ घणो काफी खूब मैरो निपट अत्यंत अति अतिशय कुल की लगभग अदाजन अंदाज मासरै टुकैक प्राय बता किंचित थमकरो सगळो सैग समूंची साव निरार चिमिमो-सो ।

(२७२) रीतिवाचक क्रियारै दुणरी रीति बतावै—

इयां किया जियां तियां किया यूं क्यूं ज्यूं त्यूं; इयांन कियांन जियांन तियांन कियांन कियां-तियां जियां-जियां कियां-कियां ज्यूं-ज्यूं त्यूं-त्यूं ज्यूं-त्यूं क्यूंकर जथा-तथा कियांई इयांई जियांई क्यूंई, चौकर्ई अचानक अनायास औचक अकस्मात अचाणचक ज्यां व्यर्थ निरथा फ़कत मुई सेंत मेंत अहलो अहळो फाळ फ़ालू होळै धीरै धीमै तेज भाकरो भाजतो ताबो पैदल पाळो तैज भोरै-सास परसपर आपसमें मांय-मांय मांहोमांय मांइमायाम घर घरमे साक्षात साख्यात प्रत्यक्ष परतख मन-मनमे अेकै-साथै अेकै-समचै यथाशक्ति यथानुमत-यथाशक्ती क्रमाक्रम फटाफट धमाधट सटासट गटागट धटाधट पटापट भटाफट खटाखट तड़ातड़ भड़ाभड़ दड़ादड़ सड़ासड़ फड़ाफड़ धड़ाधड़ बड़ाबड़ निसचै अवश्य जरूर साचैई साचम साचम साचांची अवस अवसकर बेसक निस्संदेह अलबत अलबत्तै खासकर विशेषकर विशेषत वस्तुत वास्तवमे दरअसल असलमे कदाचित क्यास क्याच स्यात शायद कदेइकर, इणवास्तै अत अतमेव ना नहीं मत कोनी कोयनी कोयमळी केवता करता सळावी नियां निया-बका अर्थो ।

सहचारवाचक —सागै सागी साथ संग पाखती कोई समेत सहित सूधो बराबर।
साधनवाचक —द्वारा जरियै मारफत।
सादृश्यवाचक —समान वाई नाई जिसो जैड़ो।
कार्य-कारणवाचक —लियै वास्तै खातर, साथ निमत निमित्त अर्थ काज कारणै कारण बैई बपी।
भिन्नतावाचक —सिवाय अलावा अतिरिक्त बिना बगैर, रहित पाखै टाळ बिगर।
तुलनावाचक —अपेक्षा बनिस्बत मार्थ करता।
विषयवाचक —विषै बाबत निस्बत भेसै माथै मर्द मई।
विनिमयवाचक —बदळै बाम्या जगा पलटै ठौड़।
विरोधवाचक —विरुद्ध खिलाफ विपरीत प्रतिकूळ।
सीमावाचक —तक ताईं, तांणी तलक तोड़ी परबत पर्यन्त।

पाठ ३५

संयोजक अव्यय

(२७८) बे वाक्योने अथवा बे शब्दोने मिलावे तेवा शब्द संयोजक अव्यय कहीये।

(१) राम और लक्ष्मण भाई हा।

(२) राजू परीक्षा दी पण पास नोती हुया।

(१७९) संयोजकरा बे भेद हुवें।

(१) व्यधिकरण (२) समानाधिकरण।

(   ) व्यधिकरण अेक मुख्य और अेक आधिन उपवाक्यनी जोडे। व्यधिकरण संयोजक अे है—

(१) कारणवाचक —क्यूं कै कारण इण वास्ते कै।

(२) उद्देशवाचक —जो कै जिससे क्यूं।

(३) संकेतवाचक —जे ना तो भी तथापि पण परन्तु पर।

(४) स्वरूपवाचक —के (न अर) जे जो अर्थात यानी माना जावें।

(१) समानाधिकरण दो बराबरना परस्पर अनाधिन उप वाक्योने जोडे। समानाधिकरण संयोजक अे है——

(१) संग-सूचक —और अर नै तथा अब।

(२) विकल्प-सूचक —या अथवा वा कै का नहिंतो नहिंतर नींतर, अन्यथा।

(३) विरोध-सूचक—पण पर, परंतु, किंतु, लेकिन बरन बरना।

(४) परिणाम-सूचक—इणमेंऽ इणवास्तै सो।

(१८२) संबंधवाचक सर्वनाम सार्वनामिक विशेषण तथा सार्वनामिक क्रियाविशेषण भी संयोजक अव्ययरो काम करै—

जो जको जिसो जितरा जितो जेहड़ो जठै जद जियां ज्यूं।

७ छिप जठै कै वो बन म्हारा है ।

८ बरसै जठै उगै ।

और —अव्यय समानाधिकरण संयोजक राजा और राणी इण दो नामानै जोड़ै ।

वारै —नामयोगी अव्यय किला शब्दासू अन्वित ।

वास्तै — नामयोगी अव्यय पूजा शब्दासू अन्वित ।

ओहो !—केवळ-प्रयोगी अव्यय हर्ष सूचित करै ।

हे — केवळ-प्रयोगी अव्यय संबोधन सूचित करै ।

मारै — नामयोगी अव्यय द्वार संज्ञासू अन्वित ।

घणो —अव्यय परिमाणवाचक क्रियाविशेषण मोडो क्रियाविशेषणरी विशेषता बतावै ।

मोडो —अव्यय रीतिवाचक क्रियाविशेषण आयो क्रियारी विशेषता बतावै ।

परसू —अव्यय कालवाचक क्रियाविशेषण आवैला क्रियारी विशेषता बतावै ।

अठै —अव्यय स्थानवाचक क्रियाविशेषण आईला क्रियारी विशेषता बतावै ।

कै —अव्यय व्यधिकरण संयोजक दो उपवाक्यानै जोड़ै ।

जठै —अव्यय स्थानवाचक क्रियाविशेषण संयोजकरी भांति प्रयुक्त, उगै क्रियारी विशेषता बतावै तथा दो उपवाक्यानै जोड़ै ।

पाठ ३८

शब्द-साधना

(२ १) नया शब्द च्यार तरैसूं बणायीजै—

(क) शब्दरै मांय स्वररो परिवर्तन करणै—

मरणो — मारणो
निकलणो — निकालणो
फिरणो — फेरणो
मुड़णो — मोड़णो
फूटणो — फोड़णो
बिकणो — बेचणो

(ख) शब्दरै पैली उपसर्ग जोड़णै—

मान — अपमान
डर — निडर
ज्ञान — अज्ञान
बळ — दुर्बळ

(ग) शब्दरै लारै परसर्ग अथवा प्रत्यय जोड़णै —

चढ़ — चढ़ाई
मीठो — मिठास
कवि — कविता
सुख — सुखियो
मन — मनियोड़ो

(घ) शब्दरै लारै दूसरो शब्द जोड़णै—

मा-बाप राज-दरबार देशभक्ति
लमोदर फल-फगे माठाणी ।

(ङ) शब्दरी पुनरुक्ति करणै—

रोम रोम मारै-मारै, बारम्बार कोरम-कोर
फेर-फार, बात-चीत पूछ-ताछ, पटर-पटर ।

पाठ ३६

स्वर विकार

(२६०) स्वर विकारसूं नीचे बताया शब्द बणायीजै—

(क) अकर्मकसूं सकर्मक क्रिया

(ख) नामसूं विशेषण

(ग) नामसूं अपत्य-वाचक नाम।

(२६१) नामसूं विशेषण बणावणो हुवै जद नामरै पैलड़ै स्वररी वृद्धि कर देवै अर्थात अ-रो आ इ-ई-रो ऐ उ-ऊ-रो औ तथा ऋ रो आर् कर देवै जियां—

नगर — नागर
क्षत्र — क्षात्र
अर्थ — आर्थ
तरंग — तारंग
कपोत — कापोत
पर्वत — पार्वत
ग्रीष्म — ग्रैष्म
पुर — पौर
शूर — शौर
मुंज — मौंज
ऋषि — आर्ष।

(२६२) नामसूं अपत्य-वाचक नाम बणावणो हुवै जणा भी नाम-रै पैलड़ै स्वररी वृद्धि करीजै। जियां—

पुत्र — पौत्र
वसुदेव — वासुदेव।

(२११) अकर्मकसूं सकर्मक क्रिया बणावै जद धातुरै उपान्त्य स्वररो गुण करीजै अर्थात् अ-रो आ इ-ई रो ए और उ-ऊ-रो ओ हुवै। जियां—

बंधणो	बांधणो	पिटणो	पीटणो
उखड़णो	उखाड़णो	पिसणो	पीसणो
उपड़णो	उपाड़णो	पुंछणो	पोंछणो }
कटणो	काटणो		पूंछणो }
खिरणो	खेरणो	फिरणो	फेरणो
खुलणो	खोलणो	फुरणो	फोरणो
घुलणो	घोलणो	बंधणो	बांधणो
घुसणो	घोसणो	बळणो	बाळणो
गड़णो	गाड़णो	भिड़णो	भेड़णो
गळणो	गाळणो	मुरणो	मोरणो
गिरणो	गेरणो	मरणो	मारणो
घिरणो	घेरणो	मिलणो	मेलणो
चलणो	चालणो	मिळणो	मेळणो
चिरणो	चीरणो	मुड़णो	मोड़णो
चुगणो	चोगणो	रळणो	राळणो
छपणो	छापणो	रुळणो	रोळणो
जमणो	जामणो	रुड़णो	रोड़णो
जुड़णो	जोड़णो	रुकणो	रोकणो
डटणो	डाटणो	सड़णो	साड़णो
डूबणो	डोबणो	मिटणो	मेटणो
तुलणो	तोलणो	लुटणो	लोटणो
दबणो	दाबणो	लुटणो	लूटणो
दुड़णो	दोड़णो	बचणो	बाचणो
मरणो	मारणो	पड़णो	पाड़णो

धुपणो	धोवणो	बळणो	बाळणो
निकळणो	निकाळणो	बसणो	बासणो
निमणो	नामणो	बिखरणो	बिखेरणो
निवड़णो	निवेड़णो	बिगड़णो	बिगाड़णो
पटणो	पाटणो	बिचरणो	बिचारणो
पड़णो	पाड़णो	समळणो	समाळणो
पळणो	पाळणो	सूवणो	सोवणो

(२१४) धातुरै अंत मे ट हुवै तो उणरो ड या ड़ हुज्यावै—

छूटणो	छोडणो
तूटणो	तोड़णो
फूटणो	फाड़णो ।

(२१५) कई रूप अनियमित-सा हुवै—

निवड़णो	निवड़णो	बिकणो	बेचणो
बिखरणो	बिखेरणो	रैवणो	राखणो
निमणो	नामणो	पीवणो	पावणो }
धुपणो	धोवणो		पिवाड़णो }
पूजणो	पूजणो		प्यावणो }

पाठ ४

उपसर्ग

(२१६) उपसर्ग सबदां पैली जुड़ै।

(२१७) राजस्थानीमें दो तरारा उपसर्ग है—(१) संस्कृतरा (२) देसी।

(२१८) संस्कृतरा उपसर्ग इण भांत है—

१ अति—अतिकाळ अतिरिक्त, अतिसै अत्यन्त अत्याचार, अत्युक्ति।

२ अधि—अधिकार, अधिपति अधिराज अधिष्ठाता अध्यात्म।

३ अनु—अनुकरण अनुक्रम अनुग्रह अनुचर, अनुज अनुभव अनुरूप।

४ अप—अपकीर्ति अपमान अपराध अपशकुन अपशब्द अपहरण।

५ अपि—अपिधान।

६ अभि अभिज्ञ अभिप्राय अभिमान अभ्यागत अभ्यास अभ्युदय।

७ अव—अवगुण अवतार, अवनति अवलोकन अवसान अवस्था।

आ—आकार आगमन आचरण आजन्म आदान।

९ उत्—उत्कण्ठा उत्तम उद्देश उद्योग उन्नति उत्पन्न उल्लेख उत्साह।

१० उप—उपकण्ठ उपकार, उपदेश उपनाम उपयोग उपमंत्री उपवन।

दु —दुगाळ दगळो दुहाग।

दू —दूबळो।

भा —भाउम्मरी भागायक।

बा —बाबाम्ना बारायर।

बे —बेईमान बेमन।

हर —हरेग हर-घड़ी।

प्रत्यय

(१७२) प्रत्यय दो प्रकाररा हुवै—

(१) जका रूप बणावै (२) जका नया शब्द बणावै।

(१७३) रूप बणावै जका प्रत्ययांरा दो प्रकार हुवै—

(१) तिङ्-प्रत्यय—जका धातवांरै आगै लागै और कालांरा रूप बणावै।

(२) विभक्ति-प्रत्यय—जका संज्ञा (अथवा संज्ञारी भांति प्रयुक्त अव्ययां) रै आगै लागै और विभक्तियांरा रूप बणावै (अनेकवचनरा प्रत्यय विभक्ति-प्रत्ययांरै अंतर्गत हुवै)।

(१७४) नया शब्द बणावै जका प्रत्यय तीन प्रकाररा हुवै—

(१) धातु प्रत्यय—जका नवी धातुवां बणावै। जियां—

पढ + ईज = पढीज (पढीजणो)
कर + ईज = करीज (करीजणो)
उठ + आव उठाव (उठावणो)
चढ + आव = चढाव (चढावणो)
स्वीकार + अ = स्वीकार (स्वीकारणो)
पत्थर + ईज = पथरीज (पथरीजणो)
चक्कर + ईज = चकरीज (चकरीजणो)
लाड + आव लडाव (लडावणो)

(२) कृत्-प्रत्यय—जका धातवांरै आगै लागै और संज्ञा या

पाठ ४२

शब्द-साधक प्रत्यय

(क) धातु-प्रत्यय

(१ ६) धातु-प्रत्यय धातवां अथवा संज्ञावां रै लारै लागै और नवी धातवां बणावै । इणारा मुख्य प्रकार औ है—

(१) अका अकर्मक अथवा सकर्मकसूं अकर्मक सकर्मक द्विकर्मक अथवा प्रेरणार्थक धातु बणावै ।

(२) अका कर्मवाच्य अथवा भाववाच्यरी धातवां बणावै ।

(३) अका नाम-धातु बणावै ।

(१) प्रथम प्रकार

(१ ७) अकर्मकसूं अकर्मक—इण मे आव प्रत्यय लागै—

सोहणो सुहावणो

सोभणो सुभावणो (=शोभा देवणो) ।

(१) सकर्मकसूं अकर्मक—इण मे ईज प्रत्यय लागै । जियां—

मरणो मरीजणो

चोरणो चोरीजणो

खावणो खायीजणो

काढणो काढीजणो ।

(१ ९) सकर्मकसूं सकर्मक—इण मे ईज प्रत्यय लागै । जियां—

पढणो पढीजणो ।

(११) सकर्मकसूं द्विकर्मक—इणमे आव आय और आड़ प्रत्यय लागै । जियां—

देखणो देखावणो देखायणो देखाड़णो

जीमणो जिमावणो जिमाड़णो

प्रत्ययसूं बणै दूजो वाव प्रत्ययसूं। कई धातवारा दोनूं प्रेरणार्थक बणै करणारो अेक-हीज बणै—

खुलणो	खोलणो	खुलावणो	खुलवावणो
कटणो	काटणो	कटावणो	कटवावणो
बिगड़णो	बिगाड़णो	बिगड़ावणो	बिगड़वावणो
मरणो	मारणो	मरावणो	मरवावणो
फुरणो	फोरणो	फोरावणो	फुरवावणो
बंधणो	बांधणो	बंधावणो	बंधवावणो
बिकणो	बेचणो	बिकावणो	बिकवावणो
टूटणो	तोड़णो	तुड़ावणो	तुड़वावणो
बैठणो		बैठावणो	बिठवावणो
उठणो		उठावणो	उठवावणो
भीजणो	भिजावणो	भिजाड़णो	
मानणो	मनावणो		
सूवणो	सुवावणो	सुवाड़णो	
बैसणो	बैसावणो		
मरीजणो (मरणो)	भरणो	भरावणो	भरवावणो
चढ़णो	चाढ़णो / चोढ़णो	चढ़ावणो	चढ़वावणो

(११३) सकर्मकसूं प्रेरणार्थक—ऊपर मुजब आव और वाव प्रत्यय जोड़नै बणावीजै—

पढ़णो	पढ़ावणो	पढ़वावणो
जीमणो	जिमावणो	जिमवावणो
देखणो	दिखावणो	दिखवावणो
बोलणो	बोलावणो	बुलवावणो

(३) तृतीय प्रकार—नाम-धातु

(११६) संज्ञारै आगै प्रत्यय लगायांसूं बणी धातु हुवै उणनै नाम धातु कैवै ।

(११७) नाम-धातुरा प्रत्यय इण भांत हुवै—

१	ईज	पत्थर	+ ईज	=	पथरीज (पथरीजणो)
		चक्कर	+ ईज	=	चकरीज (चकरीजणो)
		परच	+ ईज	=	परचीज (परचीजणो)
२	आव	चक्कर	+ आव	=	चकराव (चकरावणो)
३	अ	स्वीकार	+ अ	=	स्वीकार (स्वीकारणो)
		अनुराग	+ अ	=	अनुराग (अनुरागणो)

पाठ ४४

कई विशेष कृदन्त

(११९) नीचे बताया कृदन्त महत्त्वपूर्ण है। इणांरो विगत वर्णन करीजै है—

> (१) संज्ञा-कृदन्त (२) वर्तमान विशेषण-कृदन्त (३) भूत विशेषण-कृदन्त (४) भविष्य विशेषण-कृदन्त (५) वर्तमान क्रिया-विशेषण-कृदन्त (६) भूत क्रिया विशेषण-कृदन्त (७) विधि-कृदन्त ( ) हेतु-कृदन्त (९) पूर्वकालिक कृदन्त।

(१२) संज्ञा कृदन्त बणावण वास्तै धातु रै आगै णो अथवा ण अथवा बो प्रत्यय जोड़ै। जियां—

आवणो	आवण	आवबो
जावणो	जावण	जावबो
लेणो-देणो	लेण-देण	लेबो-देबो
करणो	करण	करबो
पढ़णो	पढ़ण	पढ़बो
चालणो	चालण	चालबो

(१२१) वर्तमान विशेषण-कृदन्त—धातु रै आगै तो प्रत्यय लागै इणरै आगै कदै-कदै थको या हुयो लाग जावै—

करतो	करतो थको	करतो हुयो
करता	करता थका	करता हुया
करती	करती थकी	करती हुई

(१२६) विधि-कृदन्त—धातुरै आगै णो अथवा बो प्रत्यय जुड़ै—

करणो खावणो
करणा खावणा
करणी खावणी

उदाहरण—म्हनै काम करणो है।
थनै काल परीक्षा देणी है।
इसो काम नहीं करणो।

(१२७) वर्तमान क्रियाविशेषण-कृदन्त—धातुरै आगै तां प्रत्यय लागै। औ कृदन्त वर्तमान विशेषण-कृदन्तसूं समानता राखै—

करतां खातां जातां आवतां।

(१२८) भूत क्रियाविशेषण-कृदन्त—धातुरै आगै इयां यां अथवा आं प्रत्यय लागै। औ भूत विशेषण-कृदन्तसूं समानता राखै—

करियां—करयां खायां बैठां नाठां।

(१२९) हेतु-कृदन्त—धातुरै आगै अण अथवा बा प्रत्यय लागै कदै-कदै वांरै नै प्रत्यय और जुड़ै—

(१) अण—करण खावण पीवण
करणनै खावणनै पीवणनै।

(२) बा—करबा खाबा पीबा
करबानै खाबानै पीबानै।

(१४) पूर्वकालिक-कृदन्त—धातुरै रूपमें—ही हुवै अथवा वांरे धातुरै आगै नै या 'र या कर प्रत्यय जुड़ै—

कर खा पी
करनै खायनै पीनै
कर'र खा'र पी'र
कर-कर खाय-कर पी-कर

(१२२) अको और इयो-री जागां प्रायःकर ओ प्रत्यय जोड़ीजै । ओ प्रत्यय जोड़ै जद जाति और वचनरै अनुसार विकार ओ प्रत्ययमें हुवै कृदन्तमें नहीं हुवै ।

करतोड़ो करतोड़ा करतोड़ी ।

(१२३) स्वरान्त धातुमें धातुरो अंतिम स्वर प्रायः सानुनासिक हुज्यावै—

जातो जांतो जावतो
जाता जांता जावता
जाती जांती जावती
जातोड़ो जांतोड़ो जावतोड़ो ।

(१२४) भूत विशेषण-कृदन्तमें इयो अथवा यो प्रत्यय लागै । प्रत्ययरै लागै वर्तमान-कृदन्तरी भांति ओ प्रत्यय अथवा अको या इयो पछै जुड़ै—

करियो करयो
करिया करया
करी करी
करियोड़ो करयोड़ो
करियोड़ा करयोड़ा
करियोड़ी करयोड़ी
लागियो लाग्यो लागो
बूझिया बूझयो बूझो

कई भूत-कृदन्त संस्कृत-प्राकृतरा भूत कृदन्तासूं बणियोड़ा है—

नष्ट नट्ठ नाठो
तुष्ट तुट्ठ तूठो
रुष्ट रुट्ठ रूठो
पृष्ट पुट्ठ पूठो

(१२६) विधि-कृदन्त—धातुरै आगै णो अथवा बो प्रत्यय जुड़ै—

करणो	खावणो
करणा	खावणा
करणी	खावणी

उदाहरण—मनै काम करणो है।
थनै काम परीक्षा देणी है।
इसो काम नहीं करणो।

(१२७) वर्तमान क्रियाविशेषण-कृदन्त—धातुरै आगै तां प्रत्यय लागै। ओ कृदन्त वर्तमान विशेषण-कृदन्तसूं समानता राखै—

करतां जातां खातां आंवतां।

(१२) भूत क्रियाविशेषण-कृदन्त—धातुरै आगै यां या अथवा आं प्रत्यय लागै। ओ भूत विशेषण-कृदन्तसूं समानता राखै—

करियां—करयां जायां बैठां नाठां।

(१२९) हेतु-कृदन्त—धातुरै आगै अण अथवा बा प्रत्यय लागै कठे-कठै आगै नै प्रत्यय ओर जुड़ै—

(१) अण—	करण	खावण	पीवण
	करणनै	खावणनै	पीवणनै।
(२) बा—	करबा	खाबा	पीबा
	करबानै	खाबानै	पीबानै।

(१४) पूर्वकालिक-कृदन्त—धातुरै रूपमें—ही हुवै अथवा सामान्य धातुरै आगै नै या र या अर प्रत्यय जुड़ै—

कर	खा	पी
करनै	खायनै	पीनै
कर'र	खा'र	पी'र
कर-अर	खाय-अर	पी-अर

ईवाड़ो —भूंडीवाड़ो सस्तीवाड़ो सूंवीवाड़ो।
ऊ —लड़ू।
ओ —आपो-धीको सरापो।
औती —बुढ़ौती मनौती कटौती।
गी —मावगी वेनगी।
गीरी —सिपाहीगीरी।
ताई —मूरखताई।
प —स्यापप (सैंयप) वीरप।
पण —बचपण मनपण सगपण।
पणो —टाबरपणो मावीतपणो मिनखापणो।
पो —बुढ़ापो मोटापो।
म —पाचम आठम दसम।
मूं —पांचमूं सातमूं दसमूं।

संस्कृत-प्रत्यय

अ —गौरव शैशव।
इमा —महिमा लघिमा गरिमा अणिमा कालिमा हरीतिमा।
ई —चातुरी माधुरी।
ता —सफलता समता नीचता सहायता।
त्यका —अधित्यका उपत्यका।
त्व —मनुष्यत्व गुरुत्व कवित्व।
य —लालित्य पांडित्य माधुर्य धैर्य काव्य वाणिज्य।

(२) जातिवाचक

आई —मिठाई, लड़ाई।
आण —ओढ़ाण बैसाण।

औती —कठौती ।

गी —गंवगी ।

णी —चांदणी ।

ळी —सूतळी ।

ळो —पूतळो ।

वाड़ —मारवाड़ मोखवाड़ ।

वाड़ो —बैठवाड़ो ।

वाळ —मेघवाळ, नगरवाळ कोसवाळ पल्लीवाळ ।

संस्कृत प्रत्यय

आमह —पितामह मातामह ।

ता —जनता ।

य —राज्य वयस्य सदस्य गम्य ।

(३) अपत्यवाचक

अ —कावळ ।

ओ —बीको बीदो जोधा ।

ओत —कांधळोत रायळोत संतदासोत ।

आणी —सावाणी मादाणी लाखाणी चीकाणी ।

को —पोसनको हिम्मतसिंहको
नाई-को, बामण-को राम-को ।

वत —बीकावत राणावत रांकावत रामावत चूड़ावत ।

संस्कृत प्रत्यय

अ —भार्गव पांडव कौरव माधव राघव पार्थ
सौमित्र मौमद ।

इ —दाशरथि सौमित्रि पाणिनि ।

एय —वैनतेय मार्कण्डेय भागिनेय कौन्तेय ।

य —आदित्य दैत्य जामदग्न्य ।

व्य —पितृव्य भ्रातृव्य ।

खोरी —सक्करखोरो चुगलखोरो ।
गर —कारीगर कामगर, मालीगर, चूड़ीगर, रफूगर।
गारो —कामगारो आबूगारो ।
दार —चौकीदार कामदार, हुकमदार ।
वार —उम्मेदवार ।

(२) विशेषण बणावणरा प्रत्यय

(१) मत्वर्थीय प्रत्यय—
आल —दयाल ।
आलु —दयालु ।
आळ —दयाळ ।
आळो —दयाळो गाडीवाळो नखराळो लारैवाळो (लारवाळो)
इयो —माळवियो ।
ई —धनी सुखी दुखी सीरी भीड़ी ।
ईलो —कोडीलो जोड़ीलो चातीलो मातीलो रातीलो।
ऊ —परलू, मीठू मेढू ।
ची —मसालची ।
दार —बूटीदार, रंगदार धारीदार चाळीदार, दाढीदार ।
मत —श्रीमत ।
मान —बुद्धिमान श्रीमान ।
ल —वातल घायल दागल ।
वत —बळवत गुणवत ।
वतो —धनवतो गुणवतो ।
वान —धाड़ीवान बळवान रूपवान धानवान धनवान।
वाळ —दयावाळ धमीवाळ ।

ओ —मूंधो तिखो ठंडो मराठो।

गर —बदगर।

नू —बेनू।

वड़ो —इकेवड़ो दोवड़ो तेवड़ो चौवड़ो पंचवड़ो।

लो —अेकलो म्हारलो बारलो आपणलो कणलो आगलो लारलो पाछलो ऊंचलो नीचलो ऊपरलो हेठलो अगलो।

छो —म्हाळ-छो पाळ-छो।

वड़ो —इकेवड़ो दोवड़ो तेवड़ो।

वों —पाचवों सातवों दसवों।

सर —कायदेसर

संस्कृत प्रत्यय

अ —शैव वैष्णव पाञ्चाल कापोत मौन मैथ यौवन पार्थिव।

अक —मीमांसक।

इक —धार्मिक सैनिक पथिक शारीरिक मानसिक वार्षिक कायिक आस्तिक वैदिक पारलौकिक राजनैतिक आध्यात्मिक।

इय —क्षत्रिय राष्ट्रिय।

ई —कुटुंबी।

ईन —कुलीन ग्रामीण विश्वजनीन।

ईय —पाणिनीय भारतीय त्वदीय मदीय राष्ट्रीय।

एय —वाराणसेय पौरुषेय पाथेय कार्तिकेय।

कीय —स्वकीय राजकीय परकीय।

कट —प्रकट उत्कट विकट।

तन —सनातन पुरातन सायंतन अद्यतन चिरंतन।

त्य —दाक्षिणात्य पाश्चात्य पौरस्त्य अमात्य।

म —मनरस।

ळो —मामळो सासळो।

कई ऊनवाचक प्रत्यय वास्तव में स्वार्थिक प्रत्यय-ही है—

ड़ी —गोमतड़ी सहेलड़ी।

ड़ो —सवेसड़ो मनड़ो हियड़ो करिमोड़ो।

(५) नारी-प्रत्यय

मरदादिसूं नारीजाति बतावणरा प्रत्यय भी तद्धित प्रत्यय है। इणारो वर्णन नारी संज्ञा प्रकरणमें हो चूको है।

मांयसू और अथवा वा नैं काथा करनै मिलायीजै । इणमें दोनूं शब्द प्रधान अर्थात् बराबरीरा हुवै । जियां—

सुख-दुख	= सुख और दुख
मा-बाप	= मा और बाप
बेटो-बेटी	= बेटो और बेटी
राम-लिछमण	= राम और लिछमण
लाल-पीळा	= लाल और *पीळा*
दो-तीन	= दो वा तीन
काळो-गोरो	= काळो वा गोरो ।

(१४७) इणरा दो भेद हुवै—

(१) समाहार—जद दोनां शब्दांरो सामूहिक अर्थ निसरीजै । समाहार-द्वन्द्व सदा अेकवचन-मैं हुवै । जियां—

मैं घणो ही सुख-दुख उठायो ।

(२) इतरेतर—जद दोनां शब्दांरो न्यारो-न्यारो अर्थ निसरीजै । इतरेतर सदा अनेकवचनमें हुवै—

मैं घणा ही सुख-दुख उठाया ।
राम-लिछमण बनमें गया ।

(२) तत्पुरुष

(१४) तत्पुरुषमें पछलो शब्द प्रधान हुवै और पैलड़ो शब्द उणरी विशेषता बतावै । इणमें पैला शब्दरा विभक्ति-चिह्नरो लोप करनै दोनां शब्दांनै मिलायीजै—

गंगा रो तट	= गंगा-तट
देस-सूं निकाळो	= देस-निकाळो
आप पर बीती	= आप-बीती

मैं—अर्थात् प्रथमा विभक्तिमें—हुवै। इणनै कर्मधारय भी कैवै। जिंया—

काळी है जकी मिर्च = काळी-मिर्च।
बाळ है जको राजा = बाळ-राजा।
आधो है मरियो जको = अध-मरियो।
जको लाल भी है और पीळो भी = लाल-पीळो।
जको खाटो भी है और मीठो भी = खट-मीठो।
दहीमें डुबियोड़ो बड़ो = दही-बड़ो।
घन जिसो स्याम = घनश्याम।
चन्द्र जिसो मुख = चंद्र-मुख।
मुख-हीज चंद्र = मुख-चन्द्र।

(१५३) समानाधिकरण तत्पुरुषमें अेक नाम और अेक विशेषण हुवै कदे-कदे दो विशेषण अथवा दो नाम हुवै। अेक नाम और अेक विशेषण हुवै तो विशेषण पैली आवै पण कदे-कदे पछै भी आवै।

विशेषण और नाम —काळीमिर्च परमानंद घनश्याम।
विशेषण और विशेषण—ऊंचो-नीचो (मारग)।
लाल-पीळी (आंख)।
नाम और नाम —चन्द्र-मुख (चंद्र जिसो मुख)।
वचनामृत (अमृत जिसो वचन)।

(१५४) पैलड़ो शब्द संख्यावाचक विशेषण हुवै और सारै समासरो सामूहिक अर्थ हुवै जद द्विगु समास कहीजै—

तीना लोकांरो समूह = त्रिलोकी।
पांच सेरांरो समूह = पसेरी।
पांच वटांरो समूह = पचवटी।
च्यार महीनांरो समूह = चौमासो।

चक्र है पाणिमे जिणरै = चक्रपाणि (विष्णु)।
इंद्र है आदिमें जिणारै = इन्द्रादि (देवता)।
चंद्र है शेखर पर जिणरै = चन्द्रशेखर (शिव)।

(२) समानाधिकरण — जब दोनूं शब्द अेक ही अर्थात् प्रथमा विभक्तिमे हुवै —

सात है खंड जिणमें = सतखंडो (महल)।
च्यार है भुजा जिणरै = च्यार-भुजा (देवी)।
महा है बाहु जिणरा = महा-बाहु (वीर)।
चन्द्र-सो है मुख जिणरो = चंद्र-मुख।

(४) अव्ययीभाव

(१२१) जो समास अव्यय बन जावै अर्थात् क्रियाविशेषणरो काम करै उणनै अव्ययीभाव कैवै।

(१२) इणमें पैलड़ो शब्द प्राय-कर अव्यय हुवै —
यथा-शक्ति = शक्तिरै अनुसार।
क्षण-क्षण = प्रत्येक क्षण मे।
यथा-समय = समय हुवै जितै ताई।
हर-घड़ी = हरेक घड़ीमे।
रातू-रात = रातरै मांय-हीज।
मनो-मन = केवळ मनमे।

(१२१) अेक-ही शब्द अर्थरै अनुसार न्यारा-न्यारा समासरै अन्तर्गत आवै। जियां — सत्यव्रत राम-पीड़ा।

(१) सत्यव्रत — सत्य और व्रत = द्वन्द्व।
सत्यरो व्रत = तत्पुरुष।
सत्य है जो व्रत = कर्मधारय।
सत्य है व्रत जिणरो = बहुव्रीहि।

(२) लाल-पीळा—लाल और पीळा

(कईं पळ लाल है कईं पीळा है)—द्वन्द्व ।

जका लाल भी है और पीळा भी है

(हरेक पळ लाल और पीळो है)—कर्मधारय ।

(१६२) समासरा शब्दांनै न्यारा-न्यारा करणंनै विग्रह कैव । ऊपर हरेक समासरो विग्रह साथै दियो है । अव्ययीभावरो विग्रह समासमें आयोड़ा शब्दांसूं नहीं हुवै अर्थरै अनुसार दूजा शब्द लावणा पड़ै—

राजा-राणी—राजा और राणी (द्वन्द्व) ।
दिन-रात —दिन और रात (द्वन्द्व) ।
बाळ-हठ —बाळ(क)रो हठ (तत्पुरुष) ।
सत्-पुरुष —सत् है जो पुरुष (कर्मधारय) ।
पसेरी —पांच सेरां रो समूह (द्विगु) ।
कमजोर —कम है जोर जिणमें (बहुव्रीहि) ।
यथाविधि —विधिरै अनुसार (अव्ययीभाव) ।
दिनरात —दिनमें और रातमें लगातार (अव्ययीभाव) ।

पाठ ४७

पुनरुक्त सबद

(१६३) सागी सबद दो वार आयां सूं बणियो सबद अठै पुनरुक्त सबद कैवै। जियां—

घड़ी-घड़ी घड़ा-घड़ा देस-देस बस-बस।

(१६४) पुनरुक्त सबद अेक प्रकाररो सामासिक सबद ही हुवै।

(१६५) पुनरुक्त सबद सात तरारा हुवै—

१ जद सबदरै आगै सागी सबद आवै—

रोम-रोम	मोटा-मोटा
कोडी-कोडी	पत्ता-पत्ता
दाणो-दाणो	हुवा-हुवा
भाई भाई	करता-करता
मीठा-मीठा	बैठा-बैठा
राम राम	पूगता-पूगता
कुण-कुण	ना-ना
कोई-कोई	पी-पी
जको-जको	देख-देख
	भागो-भागो
	धीरे-धीरे
साची-साची	गले-गले
धीमो-धीमो	ऊपर-ऊपर
दूर दूर	सामै-सामै

६ जद पम्सरी आर्य सार्थक समानुप्राय शब्द जोडीजै—

समझणो-बूझणो   बोलणो चालणो
चोर-चोर   हुास चाल
लड़णो-भिड़णो ।

७ जद दोनूं शब्द अर्थहीन हुवै —

खटर-खटर पटर-पटर, भड-भंड ।

(१६६) बोलचालमे अपूर्ण पुनरुक्त शब्दांरो घणो प्रचार है। पुनरुक्ति करण वास्तै प्राय-कर व अक्षर काममे लावीजै—

रोटी-वोटी   रोवणो-वोवणो
मोटो-वोटो   जीमणो-वीमणो
कपड़ो-वपड़ो   कलम-वलम ।

पुनरुक्ति वास्तै न्यारी-न्यारी भाषावामें न्यारा-न्यारा आखर काममें आवै—

हिंदी — व उ (चल-वल चल-उल घोड़ा-वोड़ा)
बंगला — ट (घोल-टोल घोड़ा-टोड़ा)
मैथिली — त (चल-तल घोड़ा-तोड़ा)
गुजराती — व (चळ-वळ घोड़ो-वोड़ो)
मराठी — ब (चळ-बिळ घोड़ो-बीड़ो) ।

ले सक्यो कर सक्यो बैठ सकियो आ सकियो ।
ले चुको कर चुको बैठ चुको आ चुको ।
ले लागियो कर लागियो तोड लागियो ।
ले गेर्‍यो कर गेर्‍यो मार गर्‍यो ।
ले मरियो कर मरियो डुब मरियो ।
ले पायो कर पायो बैठ पायो आ पायो ।
लेय ग्यो कर ग्यो बैठग्यो आयग्यो ।
ले आयो कर आयो बैठ आया आ आयो ।

(२) बन्ती हेतु-कृदन्तसु बनै । इसमे हेतु-कृदन्तरै आगै देखन्नो पावन्नो लागन्नो सकन्ना इत्यादि क्रियाका आवै । जिया—

लेवन दियो करण दियो आवण दियो ।
लेवन पायो करन पायो आवण पायो ।
लेवन लागियो करन लागियो आवन लागियो ।
लेवन सकियो करन सकियो आवन सकियो ।
लेनै सक्यो करनै सक्यो आनै सकियो ।
लेवा दियो करवा दियो आवा दियो ।

(३) बन्ती विधि-कृदन्तसु बनै । इसमे विधि-कृदन्तरै आगै करन्नो चाहन्नो पड़न्नो इत्यादि क्रियाका जुडै । जिया—

लेवो करै करवो करै, आवा करै ।
लेवो चाहै करवो चाहै आवा चाहै ।
लेणो चाहै करणो चाहै आणा चाहै ।
लेणो पड़ै करणो पड़ै आणो पड़ै ।

(४) बन्ती वर्तमान विशेषण-कृदन्तसु बनै । इसमे आवन्नो जावन्नो रैवन्नो इत्यादि क्रियाका जुड़ै । जिया—

लेतो आयो करतो आयो बैठतो आयो ।
लेतो गयो करतो गयो बैठतो गयो ।
लेतो रयो करतो रयो आतो रयो ।

(५) जकी भूत विशेषण-कृदन्तसे बने। इसमें जानो
जानो करनो जानो पढ़नो इत्यादि क्रियाका जाते। जैसा—

मारियो जाई   मरियो जाई।
मारियो जाई   भरियो जाई।
करियो जावे   पढियो जावे।
आयो जावे है   उठियो जावे है।
करियो जावे है   पढियो जावे है।
छूटियो पड़े है   टूटियो पड़े है।
आया करे है,   बाँधिया करे है।

(६) जकी वर्तमान क्रियाविशेषण-कृदन्तसे बने। इसमें
जानो इत्यादि क्रियाका जुड़े। जैसा—

करता जावे है   बाँधता जावे है।
उठता जावे है   उठावता जावे है।

(७) जकी भूत क्रियाविशेषण-कृदन्तसे बने। इसमें जानो
फिरनो इत्यादि क्रियाका जुड़े। जैसा—

लिया जावे है   बाँधिया जावे है
आया जावे है   किया जावे है।
उठिया जावे है   रोया जावे है।
लिया फिरे है   पढिया फिरे है।

( ) जकी संज्ञा अथवा विशेषणसे बने। इसमें विशेषकर
करनो और हुवनो क्रियाका जावे। जैसा—

स्वीकार करनो   स्वीकार हुवनो।
माफ करनो   माफ हुवनो।
याद देवनो   याद आवनो।
नाश करनो   नाश हुवनो।

(१७४) जनेरी इच्छासू संयुक्त-क्रियारा अनुमति-सूचक अध्याय

सूचक इच्छासूचक आरंभसूचक आवश्यकतासूचक कर्तव्यसूचक परीक्षा
सूचक प्रकर्षसूचक समाप्तिसूचक सातत्यसूचक सामर्थ्यसूचक इत्यादि
अनेक प्रकार हुवै—

(१) अनुमति-सूचक—जावण देवै जावा देवै ।
(२) अभ्यास-सूचक—आया करै आतो रैवै ।
(३) सातत्यसूचक—करतो जावै किया जावै करतो रैवै ।
(४) आरम्भसूचक—डरण लागै करवा लागै ।
(५) इच्छासूचक—करणो चावै कियो चावै ।
(६) आवश्यकतासूचक—करणो पड़ै करणो पड़सी करणो है करणो हुसी ।
(७) कर्तव्यसूचक—करणो चाहीजै कियो चाहीजै ।
(८) परीक्षासूचक—कर देखै ।
(९) प्रकर्षसूचक—कर नाखियो कर गेरयो कर मारयो कर बैठ्यो कर पड़यो दे मारयो कर दियो कर लियो करग्यो ।
(१) समाप्तिसूचक—कर चुको कर छूटो ।
(११) सामर्थ्यसूचक—कर सकै कर पावै ।
(१२) शीघ्रतासूचक—आयो चावै है जाणो चावै है कियो चाव है ।

अध्याय ४

वाक्य विचार

पाठ १

उद्देस्य और विधेय

(१७६) सब्दांरो बो समूह अेक पूरी बात कैवै वो वाक्य कहीजै ।

(१७७) वाक्यरा दो भाग हुवै—(१) उद्देस्य और (२) विधेय ।

(१७८) आपां कोई बात कैवां जद कोई पदार्थरो नाव लेवां और उणरै बारैमें कोई बात कैवां ।

(१७९) जिण पदार्थरै बारैमें बात कहीजै उणनै उद्देस्य कैवै और जिका बात कहीजै उणनै विधेय कैवै । जियां—

(१) विद्यार्थी पढै है ।

अठै पैली विद्यार्थी-रो नाम लियो फेर उणरै बारैमें अेक बात कही कै पढै है । इण वाक्यमें विद्यार्थी सब्द उद्देस्य और पढै है सब्द विधेय है ।

(२) फूल तोड़ीजै है ।

अठै पैली फूल-रो नाम लियो फेर उणरै बारैमें आ बात कही कै तोड़ीजै है । अठै फूल उद्देस्य और तोड़ीजै है विधेय है ।

(१) विधेयमें कम-सू-कम क्रिया जरूर रैवै ।

(१ १) वाक्य छोटा-बड़ा घण तरारा हुवै । सगसू छोटै वाक्यमें दो भाग हुवै—अेक उद्देस्य और अेक विधेय । कदे-कदे उद्देस्य लुपियोड़ो रैवै जद वाक्य अेक ही सब्दरो हुवै । जियां—

(१) जा ।

अठै पूरो वाक्य 'तू जा' है उद्देस्य 'तू' छिपियोड़ो है ।

पाठ ५१

वाक्यांरा तीन प्रकार

(१८९) रचनारी दृष्टिसूं वाक्यरा तीन प्रकार हुवै—(१) सरल, (२) जटिल और (३) संयुक्त।

(१९०) जिण वाक्यमें अेक ही समापिका क्रिया हुवै वो सरल वाक्य कहीजै। जियां—

रामचन्द्र मद्रास आवैला।

(१९१) जिको वाक्य दूसरै वाक्यरो भाग हुवै उणनै उपवाक्य कैवै। जियां—

(१) रामचन्द्र मनै कैयोहो कै हूं मंदराज जासूं।

इण वाक्यमें दो छोटा वाक्य है—

(१) रामचन्द्र मनै कैयो हो।
(२) हूं मंदराज जासूं।

दोनूं उपवाक्य है।

(२) मनै ठा कोनी कै छोरा कठै है और वे कांई करै है।

इण वाक्यमें तीन छोटा वाक्य है—

(१) मनै ठा कोनी।
(२) छोरा कठै है।
(३) वे कांई करै है।

तीनूं उपवाक्य है।

(१९२) उपवाक्य कदेई आपसमें बराबर हुवै कदेई अेक प्रधान हुवै और बाकी आश्रित।

पाठ ५२

वाक्यांरा नव प्रकार

(४ २) अर्थरी दृष्टिसूं वाक्यरा नव प्रकार हुवै —

(१) विधानार्थक — जिणमें विधान पायो जावै —

रामू गांव गयो।

(२) निषेधार्थक — जिणमें निषेध पायो जावै —

रामू गांव कोनी गयो।

(३) प्रश्नार्थक — जिणमें प्रश्न पायो जावै —

रामू गांव गयो कांई ?

रामू गांव काली गयो कांई ?

(४) आज्ञार्थक — जिणमें आज्ञा पायी जावै —

रामू ! तू गांव जा।

रामू ! तूं गांव मती जा।

(५) इच्छार्थक — जिणमें इच्छा पायी जावै —

रामू जुग-जुग जीवै।

(६) संभावनार्थक — रामू गांव जावतो हुवै।

(७) सन्देहार्थक — रामू गांव गयो हुसी।

( ) संकेतार्थक — रामू गांव आवतो तो पाछो आवतो।

(९) विस्मयादि-बोधक — जिणमें विस्मय आदि भाव पायीजै —

रामू गांव गयो !

(११८) जिणमें अेक प्रधान और अेक या अनेक आश्रित उपवाक्य हुवै वो जटिल वाक्य कहीजै । जियां—

(१) रामदास मनैं लिखियो कै हूं कलकत्ते जाऊंला ।
(२) मेह बरसतो तो खेती बणी चोखी हुती ।
(३) परिश्रम करै जको सफल हुवै ।
(४) मनैं तूं फूल दै तो हूं तनै नवी कलम दूं ।
(५) आपां जीतणो जिकामें कसर ही कांई ?
(६) हूं घरै पूग्यो जद रोटी मिली ।
(७) माई काम कोनी आयो कारण सरीर ठीक कोनी हो ।
(८) बरखा चोखी हुई जिणसूं धान मोकळा हुयो है ।
(९) मजूर काम आछो कियो इणवास्तै इनाम मिळियो ।
(१) जो मजूर माग लै तो काम बण ज्याय ।

(११९) संयुक्त वाक्यमें दो या अधिक परस्पर-अनाश्रित वाक्य हुवै ।

(४) संयुक्त वाक्य तीन तरांरा हुवै—

(१) जिणमें दोनूं उपवाक्य सरळ वाक्य हुवै ।
(२) जिणमें अेक सरळ और अेक जटिल वाक्य हुवै ।
(३) जिणमें दोनूं जटिल वाक्य हुवै ।

(४ १) परस्पर-अनाश्रित उपवाक्य समानाधिकरण संयोजकांसूं जुड़िया हुवै । जद वाक्यमें इसा उपवाक्य घणा हुवै तो संयोजक अन्तिम वाक्यरै पैली आवै बाकी उपवाक्यांरै आगै कामा ( ) लिखीजै—

(१) रामू गयो अर हूं आयो ।
(२) राधा चूल्हो जगायो अर मैं आटो ओसणियो ।
(३) गोमती घरे गयी पण सीता अठै-हीज है ।
(४) सेठरै धन मोकळो पण सुख कोनी ।
(५) किसान उठियो हळ लियो और खेतमें हालियो ।

(६) राजानें असम नीम आसन बिछिया जिसानें राजा नमस्कार कियो और आपना वृत्तान्त कथा।

(७) पमा अरु पोपी नापी बिमरा दा रसिया नागा और गमरा अरु नारी नापी बिगरा पाच रसिया नामा।

पाठ ५२

वाक्यांरा नव प्रकार

(४२) अर्थरी दृष्टिसूं वाक्यरा नव प्रकार हुवै —

(१) विधानार्थक — जिणमें विधान पायो जावै —

राम् गाव गया ।

(२) निषेधार्थक — जिणमें निषेध पायो जावै —

राम् गाव कोनी गयो ।

(३) प्रश्नार्थक — जिणम प्रश्न पायो जावै —

राम् गाव गया काई ?

राम् गांव कोनी गया काई ?

(४) आज्ञार्थक — जिणमें आज्ञा पायी जावै —

राम् ! तू गांव जा ।

राम् ! तूं गाव मती जा ।

(५) इच्छार्थक — जिणमें इच्छा पायी जावै —

राम् जुग-जुग जीवै ।

(६) सभावनार्थक — राम् गांव जावतो हुवै ।

(७) सदेहार्थक — राम् गांव गयो हुसी ।

( ) सकेतार्थक — राम् गांव जावतो तो गाडी जावतो ।

(९) विस्मयादि-बोधक — जिणमें विस्मय आदि भाव पायीजै —

राम् गाव गयो !

(८) इकवारा कर्म इकवारै सागै छणासूं पैली आवै—

(१) रामू पोथी भेयनै घरै गयो।

(२) किसन पाठ याद करतो-करतो परीक्षा देवण गयो।

(९) प्रश्नवाचक अव्यय काईं वाक्यरै अन्तमें आवै—

तूं जासी काईं ?

(१) निषेधवाचक अव्यय क्रियारै ठीक पैली आवै कदे-कदे अन्तम भी आवै कोनी अव्यय कदे-कदे क्रियारै दोनां पासी आवै—

(१) तूं घरै मती जावे।

(२) मैं पोथी कोनी बांची।

(३) तू जावे मती।

(४) माई पोथी बांची कोनी।

(५) माई पोथी को बांची नी।

(११) संप्रदान कारक प्राय कर कर्मसूं पैली आवै—

राजा बामणांनैं दिखणा दी।

(४ ५) और उदाहरण—

(१) राजा न्यावरै साथ प्रजारो पालन करै हो।

(२) गाभूरो पाटो माई रामदयाल बनारो बैमोई है।

(३) मीं वैद बणो आयो है।

(४) मारवाड़रो बैटो म्हारै गावै नागोर जासी।

(५) बादस्या अर्जीमिचजीनै सूबेदार बणाया।

(६) वो बादरा घरै ऊपर बैठा है।

(७) भाई ! तू घरै कद जासी ?

( ) अरे ! किसना कद आया ?

(९) थारो भाई नाटकमें जासी काईं ?

(१) मैं आज पोथी कोनी बांची।

पाठ ५४

अन्वय (मेळ)

(४) वचन जाति और पुरुषरी समानताने अन्वय कैवै।

(१) क्रियारो अन्वय

(४ ९) कर्तृवाच्यरी अकर्मक क्रिया कर्तारै अनुसार हुवै।

(४१०) कर्तृवाच्यरी सकर्मक क्रिया धातुसूं तथा सकळ-भूतसूं बणियोड़ा काळांमें कर्तारै अनुसार हुवै।

(४११) कर्तृवाच्यरी सकर्मक क्रिया सामान्यभूतसूं बणियोड़ा काळांमे कर्मरै अनुसार हुवै।

(४१२) कर्मवाच्यरी क्रिया कर्मरै अनुसार हुवै।

(४१३) भाववाच्यरी क्रिया कर्ता अथवा कर्म किणीरै अनुसार नहीं हुवै तथा अेकवचन नरजाति अन्यपुरुषरी हुवै।

(४१४) कर्ता और कर्म मांयसूं जको प्रथमा विभक्तिमें हुवै क्रिया उणरै अनुसार हुवै दोनूं प्रथमामें हुवै तो क्रिया कर्तारै अनुसार हुवै। जिया—

(१) घोड़ो भाग्यो।
(२) घोड़ै घास खायो।
(३) घोड़ैसूं घास खायीजै।
(४) घोड़ो घास खावै है।

(२) कर्तरि प्रयोग में कर्ता और क्रियारो अन्वय

(४१५) कर्ता अेकसूं ज्यादा हुवै तो क्रिया बहुवचनमें हुवै—
राम और लक्ष्मण बनमें गया।

(४१६) नरजाति और नारीजाति दोनूं जातियांरा कर्त्ता हुवै तो क्रिया नर-जातिरी हुवै—

राजा और राणी अठै आया ।

(४१७) उत्तम मध्यम और अन्य तीनूं पुरुषांरा कर्त्ता हुवै तो क्रिया उत्तमपुरुषरी हुवै—

हूं तूं और रतन पोथी बाचसां ।

(४१८) उत्तम और मध्यम दोनूं पुरुषांरा कर्त्ता हुवै तो क्रिया उत्तमपुरुषरी हुवै—

हूं और तूं काम अठै आसां ।

(४१९) मध्यम और अन्य दोनूं पुरुषांरा कर्त्ता हुवै तो क्रिया मध्यमपुरुषरी हुवै—

तूं और रतन पोथी बाचीजो ।

(४२) कठे-कठे क्रियारा वचन जाति पुरुष मतिम कर्त्तारै अनुसार हुवै ।

(४२१) आदर दिखावण वास्तै अेकवचनरा कर्त्तारै सागै अनेक वचनरी क्रिया आवै—

गुरूजी कद पधारिया ?

(४२२) आदर दिखावण वास्तै नारी जातिरा कर्त्ता अथवा कर्मरै सागै नर जातिरी क्रिया आवै

राणीजी काल पधारिया हा ।

राणीजीनै कद बुलाया हा ?

(४२३) आदर दिखावण वास्तै प्रश्नार्थक त्यांरो प्रयोग करीजै । जिया-

(१) आप काव्य कैसो दिरायसो ।
(२) राज सारा समाचार सिखायीजो ।
(३) पान सिरावीजै ।

(४२४) आदर दिखावण वास्तै मध्यमपुरुष-वाची आप सर्वनामरै साथै कदे-कदे मध्यपुरुषरी क्रिया वापरीजै । जियां—

(१) पान सिरावीजै सा ।
(२) अब डेरै पधारीजै ।
(३) थोड़ो कष्ट कराजै ।
(४) सारा समचार लिखाय दिराजै ।

(३) कर्मणिप्रयोगमें कर्म और क्रियारो अन्वय

(४२५) कर्मणि प्रयोगमें कर्म और क्रियारो अन्वय उणी भांत हुवै जिण भांत कर्तरि प्रयोगमें कर्ता और क्रियारो ।

(४) विशेषण और विशेष्यरो अन्वय

(४२६) ओकारान्त छोड़नै बाकी विशेषणांमें वचन जाति अथवा पुरुषरै कारण कोई अंतर नहीं हुवै ।

(४२७) ओकारान्त विशेषणमें विशेष्यरै अनुसार परिवर्तन हुवै ।

(४२) विशेष्य अनेकवचन हुवै तो विशेषण भी अनेकवचन हुवै—
काळा घोड़ा दौड़िया ।

(४२९) विशेष्य नारी-जातिरो हुवै तो विशेषण भी नारी-जातिरो हुवै—
काळी घोड़ी दौड़ी ।

(४३) नारी-जातिरो विशेषण दोनां वचनांमें समान रैवै—
काळी घोड़ी ।
काळी घोड़ियां (काळियां घोड़ियां नहीं हुवै) ।

(४३१) नर-जातिरा विशेषणमें विशेष्यरी विभक्तिरै अनुसार भी

(१) माळी-रा बेटानै बुलायी ।
(२) माळी-रै बेटै फूल तोड़िया ।

(६) क्रियाविशेषणरो प्रयोग

(४१७) कईएक विशेषण क्रियाविशेषणरो काम करै । उणामें साधारण विशेषणारी जियां विशेष्यरै अनुसार वचन-जातिरो भेद हुवै—

विद्यार्थी मोड़ो आयो ।
विद्यार्थी मोड़ा आया ।
बैन मोड़ी आयी ।
बैनां मोड़ी आयी ।

(४१८) बेगो ऊंचो नीचो आगो अळगो धीमो धीरो उंतावळो मोड़ो वगैरो इणी तरारा शब्द है—

(१) मोड़ो धीरो चालै ।
(२) बाळक धीमा चालै ।
(३) सनार कदेई मागी आयी ।
(४) तू बेगो आ ।
(५) ओ अठै आगै मोड़ो ही है ।
(६) आ अठै धीमै मोड़ी ही है ।
(७) थारला भाईनै मोड़ो लागी ।
( ) थारला बैननै मोड़ी लागी ।
(९) थारला मायांनै मोड़ा लागी ।

प्रायःकर देसरी संस्कृतेतर पुराणी भाषावांसूं आया है। अनुकरणात्मक शब्द भी देसी शब्दांमें गिणीजै।

उदा —(१) पेट, खिड़की कोठी।

(२) खड़खड़ सरसर, धर्र धर्र तड़ातड़ फटाफट भिर भिर, धर्राणे फटफटियो भड़भड़ाट फटाक-देसी।

(४४१) परदेसी शब्द वै है जका फारसी अरबी तुरकी अंग्रेजी पुर्तगाली वगैरा देसरै बाहररी भाषावांसूं आया है।

उदा —(१) तुर्की—गलीचो चकमक चाकू तोप बरोगो बेगम मुचलको सौगात उर्दू।

(२) अरबी—इमारत तसवीर खबर, अखबार इमत्यान उमर, किताब दवाई, दवात रकम तनख, मशहूर मालम।

(३) फारसी—अचार कागद कसमो तराजू, तकियो खुराक जिनावर (जानवर) दरबार, नमूनो नरम शहर, बंदोबस्त हजार दस्तकारी खुद खुदा मजबी सामान।

(४) पुर्तगाली—अलमारी कमीज कप्तान कमरो गामी गोदाम चाबी तमाखू नीलाम बाल्टी बिस्कुट कुनाम बोतल मिस्त्री।

(५) अंग्रेजी—इंजन अफसर अस्पताल अपील कप कमेटी कापी गिलास चिमनी टिकट टेबल डाक्टर नंबर मोटर पंप पार्टी पास फीस फोन बूट मशीन माचिस मोटर रबड़ रपट रेल बस लालटेन मास्टर होल्डर।

(३) योजक ( )—औ चिह्न दो सब्दांनै जोड़ै।

उदाहरण—राजा-राणी आपणो-आपणो राज-पुरुष।

(४) संक्षेपक ( ) अथवा ( )—ओ चिह्न सब्दरो संक्षेप करै सब्दरो पैलड़ो आखर लिखनै आगै ओ चिह्न लिखणैसूं पूरो सब्द समझीज ज्यावै—

उदाहरण— पं = पंडित
से = सेर
सा र = साहित्यरत्न

(५) पूरक ( )—सब्दरै आगै अथवा लारै ऊपरलो पाली लिखीजै—

उदाहरण— भूषण = साहित्यभूषण
साहित्य = साहित्यभूषण

(६) आवर्तक ( )—ऊपरली पंक्तिमें लिखियोड़ा सब्द या सब्दांरी आवृत्ति नीचैरी पंक्तिमें करणी हुवै जद ओ चिह्न वापरीजै—

उदाहरण

(क) पानो १४ कबीर रामदास रामचंद
" २२ "

(ख) राजस्थानरी इतिहास भाग १ पानो २
" २ " २५

(७) काकपद ( ) ( )—लिखती वेळा कोई आखर छूट ज्यावै तो ओ चिह्न लिखनै ऊपर अथवा हासियामें छुटियोड़ो आखर लिख देवै—

ह
उदाहरण—प मदनमो न जी मासबीय।
मोहनदास क मचंद गांधी। र

उदा॰—मार्ग—मारग रात्रि—रात वार्ता—वारता यज्ञ—जग।

६ तद्भव शब्दांमें ऋ ॠ ष ण य क्ष ज्ञ इत्या आखरांरो प्रयोग नहीं करणो।

अपवाद—राजस्थानीरी कई बोलियांमें ष आखररो प्रयोग देखीजै है उण बोलियांरा अवतरण आवै अठै ष आखररो प्रयोग करणो।

उदा॰—पारिष।

७ राजस्थानी तद्भव शब्दांरा अन्तमें आई जिका ई और ऊ दीर्घ लिखणा—

उदा॰—पाणी बही घी छोरी नारी गयी हुरी लाडू लागू, बाजू, राजू, मधू, साजू, साबू, गऊ।

विशेष—मति कान्ति हरि, साधु, गुरु इत्यादि तत्सम शब्द हुवै जद छोटी इ और छोटा उ ई लिखणा।

पुराणी भाषामें राम-नूं (राम-नैं) सूं (सो) सूं (सो) जिमूं (ज्यां) वगैरा आवै उणांनै राम-नु, सु, सु, जिमुं नहीं लिखणा।

राजस्थानमें कठैई-कठैई आ-रो उच्चारण औ या ऑ या ओ जिसो हुवै लिखणमें इसो उच्चारण नहीं दरसावणो आ ईज लिखणो—

उदा॰—कौम कॉम कोम नहीं लिखणो
काम लिखणो।

१ राजस्थानमें कठैईकठैई शब्दांरा अन्तमें य श्रुति सुणीजै लिखणमें उणनै नहीं दरसावणी—

उदा॰—आम्य लाम्य वा स्यो स्यावणो नहीं लिखणा।
आम लाम वो लो लावणो लिखणा।

१ तद्भव शब्दांमें अनुनासिक ह ध्वनि (=ह श्रुति) नैं लिखणमें नहीं बतावणी बतावणी हुवै तो लोपक-चिह्नरो प्रयोग करणो—

बरसात बरस बरात बसणो बही बहु बठैरो बंस
बाको बांस बाट बात बाणो बाजो बाचणो
बार, बास बाछड़ी बिकणो बिखरी बिगड़णो बिछणो
बीज बीकानेर बीजळी बीजणो बीस (—२)
बेचणा बेम बेस बेसी बेस बैरणो बैरा बद बैद।

१६ संस्कृतमें व हुवै जठै राजस्थानीमें ई ब लिखणो—
उदा —बाळण बाग बळ बूझणो बुधि।

१७ संस्कृतमें शब्दरा आरम्भमें द्व हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो—
उदा —द्वार—बार द्वितीया—बीज द्वितीयक—बीजो।

१८ प्राकृतमें व्व (संस्कृतमें व म्म) हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणा—

उदा —		
सर्व	सव्व	सब सरब
पर्व	पव्व	परब
खर्व	खव्व	खरब
गर्व	गव्व	गरब
द्रव्य	दव्व	दरब

१९ दो स्वरांरै बीचमें जको व हुवै उणनै व लिखणो—
उदा —सावरो भवरो पवार, पाव नाव दूवो चाव राव भाव
छावणा मोवण दूवा भावणो आवणो जावणो दूवणो
दीवणा पीवणो देवणो मेवा।*

---

* ब व और व रा नियम संक्षेपमें—
(१) संस्कृतमें व हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो।
संस्कृतमें द्व पं व्व हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो।
संस्कृतमें व हुवै जठै राजस्थानीमें व नहीं लिखणो।
(२) शब्दरा आरम्भमें आवै जद ब लिखणो।
शब्दरा मध्य अथवा अन्तमें आवै जद व लिखणो।

कर्ण	कण्ण	कान	मनक	मणउ	मणो
चूर्ण	चुण्ण	चून	सुवन	सुवन	सुवण
पूर्णक	पुण्णउ	पूनो	खनि	खणि	खाण
मन्य	मण्ण	मान	पुनि	पुणि	पुण
धन्य	धण्ण	धन	वन	वण	वण
सून्यक	सुण्णउ	सूनो	कनक	कणक	कणक
मिन्नक	मिण्णउ	मीनो	भानु	भाणु	भाण
अन्न	अण्ण	अन	रजनी	रयणी	रैण
कृष्ण	कण्ह	कान	हानि	हाणि	हाण
	कसण	किसन	नयन	नयण	नैण

अपवाद—धुन (ध्वनि) पून (पवन) मून (मौन) एव ।

विशेष—धन मन जन भन दान मान भवन पवन मुनि इत्यादि तत्सम शब्द है तद्भव नहीं ।

२२ मध्यग मध्यमे प्राकृतमे ड्ड या ण्ड हुवै बठै राजस्थानीमे ड मिलणो तथा प्राकृतमे ड (संस्कृत मे ट या ड) हुवै बठै राजस्थानीमे ड़ मिलणो—

उदा—वड्ड	वडो		पीडा	पीडा	पीड़
कोड्ड	कोड		भट	भड	भड़
लड्ड	लाड		तट	तड	तड़
गड्डिआ	गाडी		प्रति	पड	पड़
हड्ड	हाड		पत्	पड	पड़
मड्ड	माड		कोटि	कोडि	कोड़
गड्ड	गाडणो		घाटक	घाडउ	घाड़ो
अण्ड	ईंडो		शाटिका	साडिआ	साड़ी
कुड्डिआ	कडी		वाटिका	वाडिआ	वाड़ी
सुड	सूड		मुकुट	मउड	मोड़
मुड	मूडणो		कपाट	कवाड	किंवाड़

२३ तद्भव शब्दामे ड़ अथवा ढ़ रै आगी न आवै उणनै सुविधानुसार ण अथवा न लिखणो —

उदा —पड़णो चढ़णो पढ़ना बळणो गळणो तळणो बोड़णो सीड़णो मोड़णी माळणी माळण ।

२४ प्रत्यय मूळ शब्दांरै साथै मिलायनै लिखणा न्यारा नही लिखणा— उदा —उदारता धमरपणो भागीभाळो बागवान ।

२५ परसर्ग अथवा विभक्ति-प्रत्यय मूळ शब्दांरै साथै मिलायनै लिखणा —

उदा —रामनै पोथीमे घरसू मिनखरो ।

२६ संयुक्त-क्रियापद दोनूं शब्दांनै न्यारा-न्यारा लिखणा—

उदा —ले जावणो आया करणो कर देणो आयो जावै देख लेसी कर नाखैला बीमता जासी लिया फिरतो हो जावै है करतो हो पढती हुवैला देखतो हुवै उठियो हो जाता हा ।

२७ समासरा शब्दानै मिलायनै लिखणा अथवा बीचमे योजकचिह्न ( ) लिखणो—

उदा —सीताराम गुणदोष राजपुत्र नागेश्वर, मावाप सीता राम गुण-दोष हिम-गिरि आवणो-जावणो आवै-जावै अठै-उठै वरसम-परसन ।

२[illegible] अव्यय शब्द बोध मात्रा देयनै लिखणा—

उदा —आगै लारै पछै, साथै सागै वास्तै नीचै नटै जठै चौरै धुमनै पाछै भैरै मनै ।

२९ मैं रै, से आदि परसर्ग बोध मात्रा देयनै लिखणा—
उदा —रामनै मोहनरै घरसे ।

४ लिपि

१३ ळ ण मराठीरा लिखणा हिंदीरा ल ण नहीं लिखणा ।

१४ ऋ ऌ ष हिंदीरा लिखणा मराठीरा नहीं लिखणा ।

१५ ह श्रुति दरसावणी हुवै तो लोपक-चिह्न ( ) वापरणो ।
उदा —मा'र, रा'म का'नी ।

१६ तद्भव शब्दांमें ऐ-औ रो संस्कृत जिसो उच्चारण हुवै जद अइ अउ लिखणा ।
उदा —पइसा कनइयो मइयो—इणांनै पैसा कनैया मैयो नहीं लिखणा ।

१७ ऐ-औ रो देसी उच्चारण हुवै जद ऐ-औ लिखणा ।
उदा०—बैल रैला और ।

१८ ऐ-रो देसी उच्चारण हुवै जद इणनै अ-यू नहीं दरसावणो—
उदा —कैवै है इणानै कय इ नहीं लिखणो ।

१९ र्+य रै पूर्व आखर पर जोर पड़ै जद र्य लिखणा और जोर नहीं पड़ै जद रय लिखणो—
उदा —चर्य वर्य कार्य भार्या ।
चरयो वरयो बकारयो मारयो ।

४० अनुस्वारनै बड़ी मींडीसूं और अनुनासिकनै छोटी मींडीसूं दरसावणो—
उदा —हंस (पक्षी) दांत (दमन करयोड़ो) ।
हंसणो दांत ।

४१ तद्भव शब्दामें अनुस्वाररी जाग्या पंचम अक्षर नहीं लिखणो—
उदा —डंडो जंगळ चंदो पंखो संखो तंब पंडो इणानै डण्डो जङ्गळ चन्दो पङ्खो सङ्खो तम्ब पण्डो नहीं लिखणा ।

५ विदेशी शब्द

४२ अरबी फारसी अंग्रेजी वगैरा विदेशी भाषाद्वारा शब्द तद्भव रूपमे स्वीकार करणो —

उदा — कागद मालक जमी मालम दसकत मसीत मजूर सीसी सामल अगस्त छितबर जज करट रपट रपोट दरजण मासटेम फुनीम टिपट साट मिलास ।

४३ विदेशी भाषाद्वारा शब्द वापरता वखत भाषाओरा विशिष्ट उच्चारण दरसावण वास्ते चिह्न नहीं वापरणो —

उदा —	अगस्त	लिखणो	ऑगस्ट नहीं लिखणो
	कालेज	लिखणो	कॉलिज
	नजर	लिखणो	नज़र
	दफतर		दफ़्तर
	मुलम	„	मुल्म
	जबर		ज़बर
	फरक		फ़र्क „
	मालम		मअलूम
	इसम	„	इस्म } मिस्म }

शुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१	वर्णाठी	वर्णारा
१	११ २	बाकी	बाकी
१	१७	अनुस्वार	अनुस्वार
१	१७	स्वर	स्वर
४	६	नीचे	नीचे
५	४ (उ-ऐ नीचे मात्रा)	×	
५	१२	चिन्ह	चिह्न
६	४	व और व	व व और ब
११	१५	अथवा	अथवा
१७ नीचेमू	७	ग्रु ग्रू	ऊ ऊ
२५	१	पु	पू
२७	१	अढाई	पढाई
३२	८	बच	बच्च
३३	६	वेस	वेण
३५ नीचेमू	४	बाकी	बाकी
४१	८	भी	का भेदा
४२	६	पायी भी	पायीभी
४५	११	भी	भी
४८ नीचेमू	४	करण	कर्ता करण
५२	१४	वैसे	वैसे
५३ नीचेम्	७	(१)	(२)
६६	८	कर्तृ वाच्य	कर्तृ वाच्य
७२	१	हुयो हो	पूरो हुयो हो
७१	२	बनाव	बनावे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७६ नीचैसूं	१	बतामा	बतामा
७६	७	११	१
७७	२१	नियम (२१)	निकाल दिरीजै
७९	७	न रो	न-रो
८	११	सुणतो सुतो	निकाल दिरीजै
९	२	बोडिया	बोडिया
८९	१८	मामाम्परा	मामबाम्परा
९	सामान्यभविष्य (२) ग रूप	करीजैला करीजैला करीजूला	करीजैला करीजोला करीजांला
९	सा वर्तमानरा रूप	करीजै है करीजै है करीजू हूं	करीजै है करीजो हो करीजां हां
९३	११	नात	मात
९४	१	मम्पाहत	मम्माहत
९५ नीचैसू	२	मावनै	किणी भावनै
९६	५	समूंची	समूची
९	४	त्यो	त्यों
१ १	१	स्पू र्श	स्पर्श
११	८	समझो बामझो	निकाल दिरीजै
११७	७	ऊ	माऊ
१२४	१२	बाट—कम	बाट (=कम)
१२४	१८	मक तारक	निकाल दिरीजै
१२४ नीचैसू	४	म्पो	भणियो